सृजन संदेश

वर्ष-१२ अंक-६० वि.सं. २०७८ जुलाई-अगस्त २०21

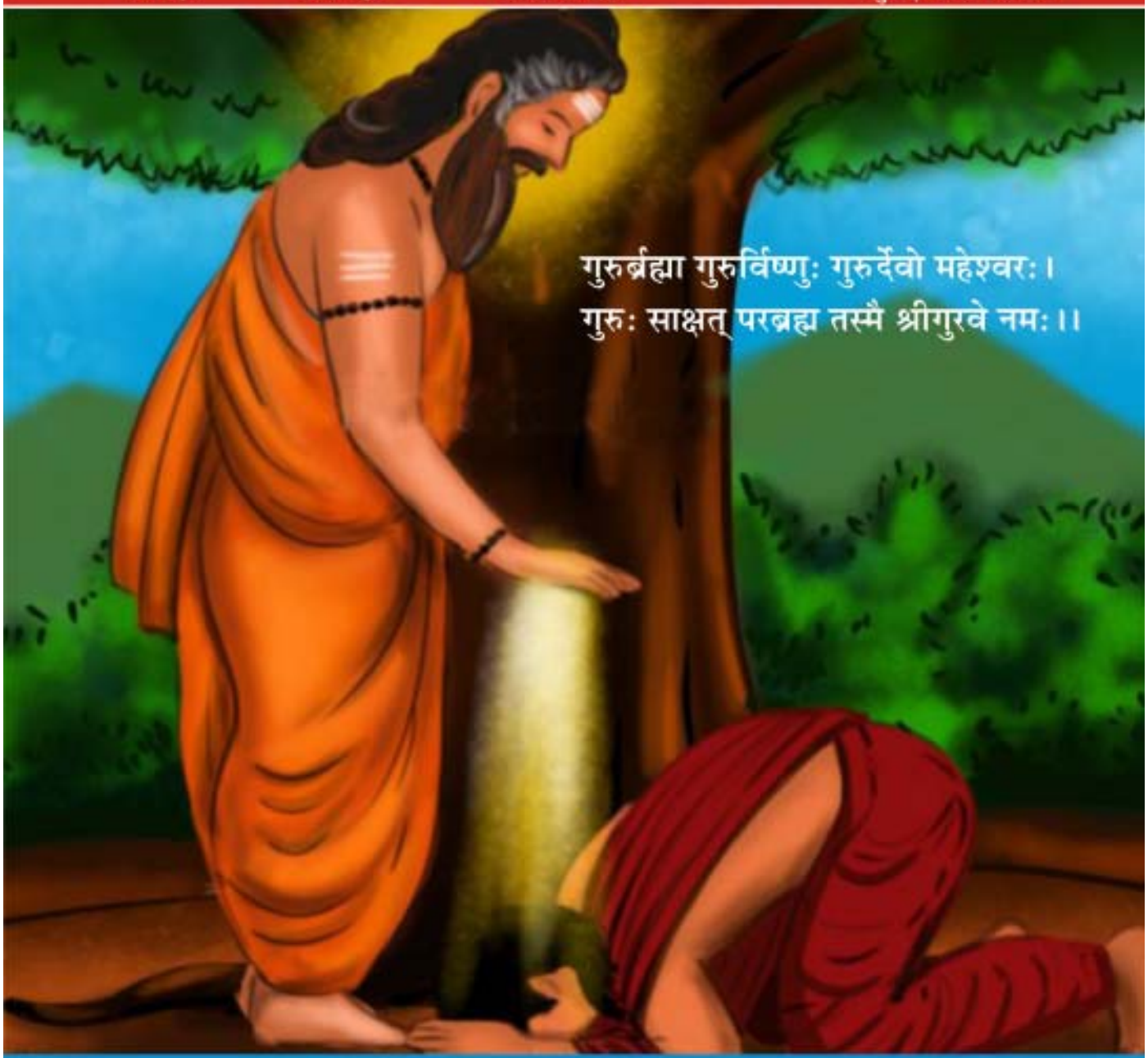

प्रकाशक :
सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़
विज्ञान महाविद्यालय के पीछे, सरस्वती विहार, रायपुर - ४९२०१० (छ.ग.)

विविध कार्यक्रम

सरस्वती शिक्षा संस्थान छ.ग. में नई शिक्षा नीति पर बैठक

स्वतंत्रता दिवस समारोह जशपुर में डॉ. देवनारायण साहू

सरस्वती शिक्षा संस्थान छ.ग. रायपुर स्वतंत्रता दिवस समारोह में उपस्थित अतिथिगण

राष्ट्रीय संगोष्ठी भोपाल में
डॉ. देवनारायण साहू (संगठन मंत्री)

जशपुर विद्यालय में माननीय संगठन मंत्री

अखंड भारत दिवस सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़

सृजन संदेश

वर्ष - १२ अंक- ६० विक्रम संवत् २०७८ जुलाई-अगस्त २०२१

संरक्षक

श्री सत्यनारायण अग्रवाल
(वरिष्ठ सदस्य, विद्या भारती मध्य क्षेत्र)
श्री भालचंद्र रावले
(संगठन मंत्री विद्या भारती मध्य क्षेत्र)
श्री बद्रीनाथ केशरवानी
(अध्यक्ष, सरस्वती शिक्षा संस्थान (छ.ग.)
श्री जुड़ावन सिंह ठाकुर
(प्रादेशिक सचिव, सरस्वती शिक्षा संस्थान छ.ग.)

परामर्शदाता

डॉ. देवनारायण साहू
(संगठन मंत्री, सरस्वती शिक्षा संस्थान छ.ग.)

संपादक

उदय रावले

संपादक मंडल

अशोक कुमार देवांगन
शिरीष दाते

प्रकाशक

सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़

विज्ञान महाविद्यालय के पीछे, सरस्वती विहार, रायपुर ४९२०१० (छ.ग.)

दूरभाषा : ०७७१-२२६२७७०,२२६२३९३ २२६२३४२
web side : www.vidyabharticg.org
e-mail:vidyabharticg@gmail.com
e-mail-srijansandesh@gmail.com
e-mail-udairaole1961@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	सम्पादकीय	03
2.	राष्ट्रीय एकजुटता भारत का सामूहिक चरित्र हो	04
3.	लोकमान्य तिलक	06
4.	साकारात्मक रखे दृष्टिकोण	09
5.	करें चुनौतियों का सामना	11
6.	गुरु पूर्णिमा विशेष गुरु है तो...	13
7.	नेकी ही घर देश और दुनिया को एक बनाएगी	14
8.	दर्शन–शुभकर्म	16
9.	प्रेरणा–परोपकार सबसे बड़ा धर्म	16
10.	आज के संदर्भ में नारी के प्रति पुरुषों का नजरिया	17
11.	पृथ्वी दिवस	20
12.	भारत माता की जय	23
13.	कोरोना काल में हिन्दी बेचारी	25
14.	हिन्दुस्तान लड़ रहा है।	25
15.	स्कूल की तैयारी	26
16.	विद्या भारती पूर्व छात्र परिषद छ.ग. प्रान्त में महासहायता अभियान	27
17.	गुरू पूर्णिमा उत्सव	28
18.	वृक्षारोपण	29
19.	योग शिविर	30
20.	कोविड सेन्टर संचालित	33
21.	विज्ञान मेला	37
22.	हायर सेकण्डरी परीक्षा परिणाम	38
23.	विद्यालय का गौरव	39
24.	स्वतंत्रता दिवस समारोह	41
25.	विनमश्रद्धांजलि	42

सम्पादकीय

प्रिय, पाठकगण

सादर नमस्कार!

पूर्व की तरह ही पत्रिका पर अपनी प्रतिक्रिया प्रदान करने का आग्रह करते हुए आप सभी को गुरू पूर्णिमा, स्वतंत्रता दिवस, रक्षा बंधन सहित सभी उत्सवों व विशेष दिवसों की बधाई शुभकामना प्रदान करता हूँ।

इस बार पत्रिका में कुछ विचारपरक लेख सम्मिलित किये हैं। साथ ही कविगणों को स्थान दिया है। कोरोना काल में दिवंगत आत्माओं की शांति हेतु श्रद्धासुमन भी है। किसी का नाम यदि छुट गया हो तो सूचित करें आगामी अंक में उसकी पूर्ति की जायेगी।

अभी भी हमें सुधीजनों के लेख व कविताएँ, कलाकृतियाँ, विचार पर्याप्त व स्तरीय नहीं मिल पा रहे हैं। आप सभी सक्षम जन हमें स्नेह करते ही हैं पर सहयोग की भी साथ ही अपेक्षा है। स्वयं लिखे, संकलन कर दें पर उत्तम विषय सामग्री का प्रेषण करे। कार्यक्रम के चित्र, फोटो आदि भी कुछ निश्चित विद्यालयों से ही मिल रहे हैं। सभी से सहभागिता की अपेक्षा है। आशा है। आप हमारे निवेदन पर विचार करेंगे और हमें सहयोग करेंगे–

उदय रावले

संपादक

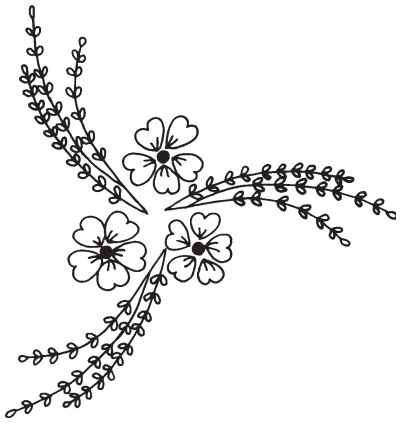

राष्ट्रीय एकजुटता भारत का सामूहिक चरित्र हो

कोविड-19महामारी के दौरान देश सामूहिक एकता के महत्व को पहचाना है। विभिन्न धर्म, जाति, भाषा, बोली, क्षेत्र आदि के देश भारत में राष्ट्रीय एकता और अखंडता का अहम स्थान है। कोरोनाकाल में देशवासियों में आपसी सदभाव गहरा हुआ है। हाल के वर्षों में जातिवादी व सांप्रदायिक राजनीति के चलते देश में सामाजिक विभाजन गहरा हुआ, जिसे कम करने के राजनीतिक प्रयास नहीं हुए, लेकिन कोरोना महामारी के दौरान लोगों ने राजनीति के खोखलेपन को करीब से देखा, जब ऑक्सीजन दवा, बेड, खाना आदि के लिए लोग धर्म-जाति से ऊपर उठकर लोग एक-दूसरे की मदद करते दिखे। इससे लोगों की आपसी दूरियां भी मिटी। सबका साथ सबका विकास और आत्मनिर्भर भारत के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्र सर्वप्रथम, हमेशा सर्वप्रथम का आह्वान किया है। अपने मन की बात कार्यक्रम में पीएम ने कहा कि ऐसे समय में जब देश आजादी के 75 वें साल में प्रवेश कर रहा है, हर भारतीय को महात्मा गांधी के नेतृत्व में हुए 'भारत छोड़ो आंदोलन' की तर्ज पर 'भारत जोड़ो आंदोलन' का नेतृत्व करना है। आजादी की 75 वीं वर्षगांठ पर मनाया जा रहा 'अमृत महोत्सव' कार्यक्रम ना तो किसी सरकार का या फिर किसी राजनीतिक दल का है बल्कि देश की जनता का है। वाकई में देश को इस वक्त भारत जोड़ो आंदोलन की आवश्यकता है। देश व समाज में अतिवादी विचारधारा के हावी होने के बाद समुदायों में वैचारिक मतभेद अधिक बढ़ गए हैं। जबकि संविधान की नजर में सभी देशवासी समान हैं। जिस प्रकार देश की आजादी के लिए सभी लोग एकजुट हो गए थे, उसी स्पिरिट के साथ सभी को देश के विकास के लिए भी एकजुट होता है। इस साल 15 अगस्त को देश आजादी के 75 वें साल में प्रवेश कर रहा है। इस अवसर पर देश अमृत महोत्सव मना रहा है जिसकी मूल भावना अपने स्वाधीनता सेनानियों के मार्ग पर चलना और उनके सपनों का देश बनाना है। अमृत महोत्सव किसी सरकार का कार्यक्रम नहीं, किसी राजनीतिक दल का कार्यक्रम नहीं, यह कोटि-कोटि भारतवासियों का कार्यक्रम है। ये हमारा कर्तव्य है कि हम अपना काम ऐसे करें जो विविधताओं से भरे हमारे भारत को जोड़ने में मददगार हो। हमें अपनी आजादी को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए देश ही हमारी सबसे बड़ी आस्था, सबसे बड़ी प्राथमिकता बना रहना चाहिए। राष्ट्रीय एकता व स्वाभिमान का सबसे बढ़िया उदाहरण खेल के दौरान देखने को मिलता है। टोक्यो ओलंपिक में जब देश के लोगों ने हाथों में तिरंगा लेकर भारतीय दल को वहां चलते देखा तो पूरे राष्ट्र ने गौरवान्वित महसूस किया। इस ओलंपिक में वेटलिफ्टिंग में

मीरा बाई चानू ने सिल्वर जीता, पर देशवासियों को लगा कि समूचे भारत ने जीता। यही सभी अंतरराष्ट्रीय खेल स्पर्धाओं में होता है। खिलाड़ी के जीतने पर इसे भारत की जीत कही जाती है, हारने पर भी भारत की हार। यह हमारी राष्ट्रीय भावन हैै। सौ साल से अधिक संघर्षों व बलिदानों के बाद देश को आजादी मिली है, वह भी विभाजन की त्रासदी के साथ। आजादी के बाद भारत को चार युद्ध लड़ना पड़ा है। कारगिल में भी पाक घुसपैठियों को खदेड़ना पड़ा है। चीन व पाक समेत कई देश हैं जो भारत के साथ दुश्मनी का भाव रखते हैं। ऐसे में हम भारतवासियों का एकजूट, सशक्त रहना आवश्यक है। रोज के काम काज करते हुए भी हम राष्ट्र निर्माण कर सकते हैं। हमें अपने देश के स्थानीय उद्यमियों कलाकारों, शिल्पकारों, बुनकरों को सहयोग करना हमारे सहज स्वभाव में होना चाहिए। हम स्वदेशी अपना कर अपने देश को आत्मनिर्भर बना सकते हैं, बस हमें अपनी खरीदारी की आदत बदलनी है। हम खुद अपने राष्ट्र की ताकत हैं। हम सामूहिक चरित्र का निर्माण कर देश की एकता व अखंडता को अक्षुण्ण रखते हुए भारत को विकसित राष्ट्र की श्रेणी में खड़ा कर सकते हैं।

----00---

जयंती विशेष

लोकमान्य तिलक

''स्वराज के प्रणेता लोकमान्य तिलक का व्यक्तित्व सौ साल बाद भी लोगों के मन-मस्तिष्क में छाप छोड़े हुए हैं।''

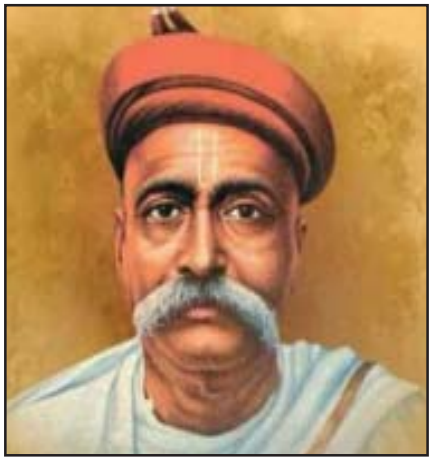

अमर स्वतंत्रता सेनानी और महान विचारक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने सौ साल पहले। 01 अगस्त 1920 को इस लोक से परलोक की ओर प्रयाण किया था, परन्तु उनके व्यक्तित्व, विचार और उनके द्वारा स्थापित परंपराओं की प्रासंगिकता आज भी पहले जितनी ही है। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व आज के लिए एक अमूल्य धरोहर है जिसमें व्यक्ति, समाज और राष्ट्र तीनों का दिशा दर्शन करने का कालजयी सामर्थ्य है। तिलक जी बहुआयामी क्षमता के धनी थे। शिक्षक, अधिवक्ता, पत्रकार, समाज सुधारक, चिंतक दार्शनिक, प्रखर वक्ता नेता, स्वतंत्रता सेनानी जैसे विभिन्न रूपों और उनके दायित्वों का उन्होंने सम्यक ढंग से निर्वहन किया।

तिलकजी की विलक्षण क्षमता और व्यापक व्यक्तित्व को समझना इतना आसान नहीं है। उनके व्यक्तित्व में एक ऐसा तेज, एक ऐसी ऊर्जा थी जिससे आम और खास सभी लोग सहज ही आकर्षित और प्रेरित हो जाते थे। तिलक जी की इस ऊर्जा से महात्मा गांधी को स्वदेशी का मंत्र मिला तो मदन मोहन मालवीय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के निर्माण में जुट गए और सावरकर एवं अरविंदो घोष क्रोंति के मार्ग पर निकल पड़े।

तिलक ने कहा था- स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर ही रहूंगा-

राष्ट्र की स्वाधीनता को लेकर तिलक जी का स्पष्ट मत था वह कांग्रेस में पहले व्यक्ति थे जिन्होंने संपूर्ण स्वराज्य की मांग करते हुए कहा था- स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और इसे मैं लेकर ही रहूंगा। इस वाक्य में स्वतंत्रता आंदोलन को लोक आन्दोलन में परिवर्तित करने में बड़ी भूमिका निभाई। उनका मानना था कि भारतीयों को अपनी संस्कृति के गौरव से परिचित कराने पर ही उनमें आत्मगौरव एवं राष्ट्रीयता की भावना पैदा की जा सकती है।

उन्होंने अपने समाचार पत्र मराठा में लिखा था- सच्चाराष्ट्रवाद पुरानी नींव के आधार पर दी निर्मित हो सकता है। 1951 में जब भारतीय जनसंघ की स्थापना हुई तो उसके मूल में कहीं न कहीं

तिलकजी का यह दर्शन समाहित था, क्योंकि जनसंघ ने भारत के विकास का जो खाका बनाया वह भारतीय दर्शन, संस्कृति और ज्ञान पर आधारित था।

तिलकजी भारतीय सांस्कृतिक जागरूक के आधार पर देशवासियों में राष्ट्रप्रेम उत्पन्न करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने अनेक प्रकार की पहल की जिसमें सार्वजनिक गणपति उत्सव और शिवाजी महाराज जयंती प्रमुख है। ये उत्सव आज भी बड़ी परंपरा बन चुके हैं। सांस्कृतिक जागरण के इन प्रयासों से तिलकजी ने राष्ट्रीय आन्दोलन जो आज कांग्रेस के कुछ उदारवादियों और उनके अनुयायियों तक सीमित था को सामान्य जन तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण काम किया। अगर स्वाधीनता संग्राम को भारतीय बनाने का किसी ने काम किया तो वह तिलक जी ने किया।

वह सदैव जनता से जुड़े रहे और इसी क्रम में स्वत: ही उनके नाम के साथ लोकमान्य जैसी उपाधि जुड़ गई। अपनी राष्ट्रवादी पत्रकारिता से भी तिलकजी स्वाधीनता की अलख जगाते रहे। अंग्रेजी में 'मराठा' और मराठी में 'केसरी' नामक समाचार पत्रों के माध्यम से जब उनके लेख लोगों तक पहुंचते तो उनका एक-एक शब्द अंग्रेजी हुकुमत के विरुद्ध विद्रोह की चिंगारी भरने और स्वाधीनता की ज्वाला को प्रबल करने का काम करता। अपने लेखों में तिलक जी अंग्रेजों की क्रूरता और भारतीय संस्कृति के प्रति उनकी हीनभावना की बड़ी आलोचना करते थे। उनकी कलम से अंग्रेज हुकूमत किस कदर भयभीत थी इसका अनुमान इससे होता है कि केसरी में छपने वाले लेखों की वजह से उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा।

तिलक जी भारतीय आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक विषयों की गहरी समझ रखते थे। जब ब्रिटिश हुकुमत ने उन पर राजद्रोह का मुकदमा करके उन्हें बर्मा की मांडले जेल में भेज दिया तो वहां भी उनकी सांस्कृतिक चेतना और सक्रियता पर विराम नहीं लगा। जेल में उनके भीतर का विद्वान जाग उठा और हमें श्री मद्भागवत गीता के रहस्य खोलने वाली 'गीता रहस्य' नामक कृति प्राप्त हुई जिसके विषय में राष्ट्रकवि दिनकर ने कहा था, श्रीमदभगवतगीता एक बार तो कर्मयोगी भगवान श्रीकृष्ण के मुख से कही गई और दूसरी बार उसका सच्चा आख्यान तिलक ने किया।

तिलक का कहना था- सामाजिक सुधार तभी संभव है जब नेता इन्हें अपने जीवन में लागू करें। 25 मार्च 1918 को मुंबई में दलित जाति के सम्मेलन में उन्होंने कहा था कि यदि ईश्वर अस्पृश्यता को सहन करे तो मैं उसे ईश्वर के रूप में सहन नहीं करुंगा। तब ऐसी बात कहना साहस का काम था।

तिलक न सिर्फ राजनीति शास्त्र के ज्ञाता थे बल्कि रणनीति में भी सिद्धहस्त थे।

विभिन्न अवसरों पर दलित जाति के लोगों के साथ भोजन करके उन्होंने अपने छुआछूत विरोधी विचारों को सिद्ध भी किया। वीरसावरकरजी द्वारा

तिलक जयंती समारोह में कहा गया था जहाँ तक कानून का निर्बंध का दायरा लंबा जा सके वहाँ तक लड़ाई को लड़ते रहना, अगर निर्बंध थोड़े बढ़ गए तो तोड़ देना।

तिलक का संदेश था– अन्य देशों पर भारत की निर्भरता कम हो।

आज आत्मनिर्भर भारत की बात हो रही है तिलक जी ने भी स्वदेशी और आत्मनिर्भरता पर बल दिया था। उन्होंने शिक्षा, मीडिया, लघु उद्योग आरंभ किए और उनका कपड़ा मिल जैसे क्षेत्र में अनेक उद्योग संचालन भी किया। देशी उद्योगों को पूंजी मुहैया कराने हेतु उन्होंने ''पैसा फंड'' नामक एक कोष शुरू किया और युवाओं का आह्वान किया कि वे एक दिन का वेतन उसमें दे। इन सब गतिविधियों के माध्यम उनका यही संदेश था कि अन्य देशों पर भारत की निर्भरता कम हो।

आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश आत्मनिर्भर होने की दिशा में अग्रसर है। मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने पर तिलकजी बल देते थे। आज 34 साल बाद सरकार नई शिक्षा नीति लाई है तो उसमें मातृभाषा में शिक्षा को लेकर व्यवस्था की गई है।

तिलक का व्यक्तित्व सौ साल बाद भी लोगों के मन मस्तिष्क में अपनी छाप छोड़े हुए हैं और आने वाले अनेक वर्षों तक इसका प्रभाव बना रहेगा।

डॉ. देवनारायण साहू

संगठनमंत्री सरस्वती शिक्षा संस्थान छ.ग.।

---oo---

सकारात्मक रखें दृष्टिकोण

हमारा दृष्टिकोण ही हमारे जीवन की दिशाधारा तय करता है। छोटी-छोटी घटनाओं में दृष्टिभेद से ही हमारे देखने के नजरिए में बहुत अंतर हो जाता है। जैसे-यदि शरबत से भरा हुआ आधा गिलास है, तो वह किसी के लिए आधा खाली है, जबकि किसी और के लिए वह आधा गिलास भरा हुआ है। जिसे वह शरबत नहीं चाहिए, उसके लिए वह आधा भरा हुआ है और जिसे उस शरबत की प्यास है, उसके लिए वह गिलास आधा खाली है, पूरा भरा हुआ नहीं है। गिलास को आधा भरा हुआ कहो या आधा खाली, दोनों का मतलब एक ही है, लेकिन इसमें दृष्टिकोण का फरक है और हमारी इच्छाओं का भी।

जिस व्यक्ति ने गिलास को शरबत से आधा भरा हुआ समझा, उसका दृष्टिकोण सकारात्मक था और जिस व्यक्ति ने उस शरबत के गिलास को आधा खाली समझा, उसका दृष्टिकोण निषेधात्मक था, यानी निषेधात्मक दृष्टिकोण वाले व्यक्ति का ध्यान अभाव की ओर रहता है, जबकि सकारात्मक दृष्टिकोण वाले व्यक्ति का ध्यान भाव की ओर रहता है।

हर व्यक्ति में गुण और अवगुण, दोनों होते हैं, लेकिन यदि हमारा चिंतन गुणों की ओर केंद्रित रहे, तो उसके फायदे के रूप में हमें शांति व प्रसन्नता का अनुभव होता है। इसके विपरीत निराशावादी और अवगुणवादी मनुष्य अपने चारों ओर अभावों और दोषों के दर्शन करते रहते हैं, जिसके कारण वे अपने जीवन में शांति और प्रसन्नता का अनुभव कर ही नहीं पाते। जो व्यक्ति अभाव को भाव, विषाद को हर्ष तथा दु:ख को सुख में बदलने की कला जानता है- उसी व्यक्ति का जीवन सार्थक एवं सफल है।

दु:खी मनुष्य अपनी कल्पनाओं के सहारे छोटे से दु:ख को भी बहुत बड़ा रूप दे देता है।वह स्वयं को संसार का सबसे दु:खी और अभागा व्यक्ति समझने लगता है पर, यह सब मात्र भ्रम होता है। सच्चाई यह है कि उससे भी अधिक दु:खी और समस्याग्रस्त लोगों से यह संसार भरा हुआ है।

सुखी और दु:खी, दोनों तरह के मनुष्यों के लिए अपनी दृष्टि की व्यापक बनाना जरूरी है। इससे जहाँ सुख का अभिमान मिट जाता है, तो वहीं दु:ख का भाव और तनाव भी खतम हो जाता है। अपनी वास्तविक स्थिति को भूलकर हम जब भी औरों से अपनी तुलना करने का प्रयत्न करेंगे, हम अपने कर्तव्यों से व भली प्रकार अपने कर्म करने से विमुख होंगे। ऐसा करने पर हम मात्र औरों के हाथों का खिलौना बनकर रह जाएंगे।

वास्तव में सुख और दु:ख दोनों ही सीमाहीन हैं यानी इनकी कोई सीमा नहीं है। ऐसी स्थिति में यदि हम स्वयं को घोर दु:खी और अभागा समझने लगे, तो हमें इसके नए-नए कारण मिलते ही चले

जाते हैं। जैसे–रोगी मनुष्य रोग से भी अधिक उसकी कल्पना व चिंता के भार से रोगी होता है, उसी प्रकार दु:खी व्यक्ति उलझनों और समस्याओं की पुन:–पुन: स्मृति से और अधिक दु:खी होता है।

एक सामान्य प्रवृत्ति यह है कि प्रत्येक मनुष्य स्वयं को अधिक दु:खी समझता है। इस मनोवृत्ति में सुधार और परिष्कार करना चाहिए। दूर से पर्वत, मनोरम प्रतीत होते हैं, लेकिन उनके निकट जाने पर उनका आकर्षण खतम हो जाता है। इसी तरह दूर से ढोल बजने की आवाज आने पर बहुत अच्छा लगता है, लेकिन इनके पास जाने पर ढोल के तेज स्वर के कारण मन बेचैन होने लगता है।

कुछ लोग अपने परिवार के वातावरण, व्यवसाय व नौकरी से व्यर्थ ही असंतुष्ट और दु:खी प्रतीत होते हैं। प्राय: उन्हें दूसरे परिवारों में, व्यवसाय में, नौकरी में अधिक सुख–शांति, वैभव, उन्नति के दर्शन होते हैं, पर जब वे उनकी अंतरंग स्थिति से परिचित होते हैं, तो स्वयं के अज्ञान पर ही हँसने लगते हैं।

दूसरों को देखकर उनके जैसा बनने, उनके जैसा पाने यानी देखादेखी करने की यह मनोवृत्ति व्यक्ति को सिर्फ भीड़ का एक हिस्सा बनाकर छोड़ देती है, जो न सही सोच सकता है और न ही सही निर्णय ले सकता है और न ही सही समय पर प्रतिकूल हवाओं से स्वयं को बचा सकता है। यह देखादेखी की मानसिकता उसे न प्रेरक संदेश दे पाती है और न उचित निर्णय और ऊंचा आदर्श बनाने देती है। इन जटिल और विषम स्थितियों में हमारी आध्यात्मिकसाधना और उपासना ही हमारे सोये हुए मनोबल और आत्मबल को जगा सकती है और उसी से दु:ख और भय की ग्रंथियाँ नष्ट हो सकती है। ऐसा होने पर ही हम स्वयं को सुखी व सौभाग्यशाली महसूस कर सकते हैं और फिर वैसे में स्वयं ही नए–नए अवसर मिलते चले जाते हैं।

----00---

करें चुनौतियों का सामना

व्यक्ति में आराम एवं सुख-चैन भरी जिंदगी की चाह एक स्वाभाविक इच्छा है, लेकिन इसकी अधिकता जीवन पर प्रतिकूल असर डालती है। ऐसे में व्यक्ति के अंदर जो संभावनाएँ भरी होती हैं, उनका प्रकटीकरण नहीं हो पाता। आज का मनोविज्ञान कहता है कि मानव के अवचेतन मन में अपार संभावनाएँ हैं। भारतीय अध्यात्म तो इससे भी आगे सुपरचेतन की बात करता है और इसके आधार पर सदैव से प्रतिपादन करता रहा है कि मनुष्य के अंदर वह सब कुछ बीजरूप में निहित है, जो स्वयं परमात्मा में है, लेकिन इसकी प्रकटीकरण, इसकी अभिव्यक्ति की अपनी प्रक्रिया है, जो चुनौतियों से भरे मार्ग से होकर गुजरती है।

जो चुनौतियों का सामना करना जानते हैं, हर विषम परिस्थिति का साहस के साथ मुकाबला करते हैं, वे ही वास्तविक सफलता के अधिकारी बन पाते हैं, जिसकी आलसी एवं आरामतलब व्यक्ति कल्पना भी नहीं कर सकता। उसके हिस्से में आती है सिर्फ असफलता, हताशा और निराशा। वस्तुतः चुनौतियों से बचने वाला व्यक्ति अपने कम्फर्ट जोन में ही अटका रहता है, जहाँ उसकी सकल संभावनाओं पर तुषारापात होता है।

कहावत भी है कि कम्फर्ट जोन व्यक्ति के उत्कर्ष का कफन है, यह व्यक्तित्व के विकास में कैंसर रोग जैसा है। यह व्यक्ति की अंतर्निहित शक्तियों को प्रकट नहीं होने देता और उसमें जन्म से विद्यमान क्षमताओं एवं संभावनाओं को कुंद कर देता है। व्यक्ति जीवन में उन्नति के जिन शिखरों का आरोहण कर सकता था, वे सपने बनकर रह जाते हैं, कभी भी साकार नहीं हो पाते।

कम्फर्ट जोन एक ऐसी मनोवैज्ञानिक स्थिति है जिसमें व्यक्ति चीजों से परिचित अनुभव करता है, सुख-चैन भरी सुरक्षित अवस्था में होने का बोध करता है तथा स्थिति पर नियंत्रण का आभास पाता है, लेकिन वास्तव में यह एक ढर्रे का जीवन होता है, जिसमें उत्कर्ष के लिए आवश्यक सकारात्मक तनाव एवं उत्प्रेरणा की न्यूनता रहती है। जबकि व्यक्तिगत विकास के लिए इस कम्फर्ट जोन से बाहर निकलने की आवश्यकता होती है और कहावत भी प्रचलित है कि अर्थपूर्ण जीवन कम्फर्ट जोन के बाहर ही प्रारंभ होता है।

कम्फर्ट जोन से बाहर निकलने का अर्थ ऐसे कार्यों को हाथ में लेना है, जो आपको एक ढर्रे के जीवन से बाहर निकालते हैं, जिनमें आप सहज अनुभव नहीं करते, जो आपकी क्षमता एवं योग्यता को चुनौती देने वाले प्रतीत होते हैं, लेकिन जिनको आजमाने से आपकी अंतर्निहित क्षमताएँ प्रकट होती है। हालांकि यह भी एक कला है, जिसमें विवेक के आधार पर चुनौतियों का वरण किया जाता है। इसमें ऐसी अतिवादिता या हठवादिता से सावधान रहना होता है, जिसके परिणाम स्वयं के लिए घातक हों या समाज के लिए हितकर न हों।

इस तरह कम्फर्ट जोन से बाहर निकलकर चुनौतियों का सामना न केवल उत्पादकता को बढ़ाता है, बल्कि इससे व्यक्ति की रचनात्मक क्षमता में भी वृद्धि होती है और भविष्य में आने वाली अनिश्चितताओं से जूझने कीक्षमता बढ़ती है। इस तरह नित नई चुनौतियों का सामना करने, इनसे कुछ सीखने, व्यक्तित्व के नए आयामों के उद्घाटन के साथ जीवन-विकास पथ पर बढ़ती एक रोमांचक यात्रा बन जाता है। निश्चित रूप में इसके साथ प्रसन्नता की बढ़ोतरी होती है और जीवन अधिक संतोषदायक बनता है।

इस तरह जीवन में उत्कर्ष के इच्छुक व्यक्तियों के लिए एक ही रास्ता है, वह है चुनौतियों का सहर्ष सामना करते हुए नित-नवीन बुलंदियों को हासिल करना। अपने भय-दुर्बलताओं को आंखों में देखकर इन्हें काबू करना। यदि चुनौतियाँ नहीं हैं तो स्वयं ही इनका निर्माण करना, ऐसी परिस्थितियों में स्वयं को झोंक देना। ऐसे साहसिक पथ पर बढ़ते हुए व्यक्ति नित नए शिखरों का आरोहण करता है और संतोष भरी उपलब्धि के गहन भाव के साथ स्वयं को धन्य अनुभव करता है, क्योंकि जो वह कर सकता था, वह उसने किया।

इसके साथ ही उसमें यह विश्वास भी जगता है कि यदि व्यक्ति ठान ले तो वह कुछ भी कर सकता है, लेकिन यह सब होता जीवन में आई चुनौतियों का साहस एवं दृढ़तापूर्वक सामना करने के बाद ही है। यदि व्यक्ति कम्फर्ट जोन में ही अटका रहा तो उसकी संभावनाएँ दम तोड़ने लगती हैं तथा कोरे सपने बुनने, योजनाएँ बनाने में ही जीवन बीत जाता है। अत: जीवन में चुनौतियों के प्रति दृष्टिकोण बदलने की जरूरत है, इनसे भयभीत होने एवं बचने के बजाय इनको अपना सच्चा हितैषी मानकर इनका साहसपूर्वक सामना करने की आवश्यकता है। यही जीवन में उत्कर्ष की अग्नि कसौटी है, जो यह सिद्ध करती है कि भय के ऊपर विजय संभव है।

---00---

गुरू पूर्णिमा विशेष
गुरू है तो...

गुरुर्ब्रह्म गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर:।

गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नम:।

गुरु को ब्रह्म के रूप में सृजनकर्ता, विष्णु के रूप में पालनकर्ता और शिव के रूप में न्यायकर्ता माना गया है। गुरु वह जो कर्तव्य पथ को सत्प्रेरणा प्रदान कर शिष्य को परम श्रेष्ठ लक्ष्य की ओर प्रवृत्त करता है। गुरु शिष्य परंपरा भारतीय संस्कृति की अति उत्तम धरोहर है।

गुरु गु शब्दस्तु अंधकार:, स्यात रू शब्द स्तन्निरोधक: अंधकार निरोधत्वात् गुरू इति अधिधीयते।।

गुरु अर्थात् अज्ञानरूपी अंधकार को नष्ट करने वाला। गुरू कृपा बिना गुरु प्राप्ति नहीं होती है।

संत कबीर ने कहा हैं

गुरु-गोविंद दोऊ खड़े काके लागूं पाय

बलिहारी गुरु आपने, जिन गोविंद दिया मिलाय।

किसी कवि ने गुरु शब्द की बड़ी सुंदर व्याख्या की है-

गुरू है तो ज्ञान है,

गुरू है तो ध्यान है,

गुरू है तो मान है,

गुरू है तो यश है,

गुरू है तो कीर्ति है,

गुरू है तो साहित्य है

गुरू है तो चिंतन है,

गुरू है तो संस्कार है,

गुरू है तो संस्कृति है,

गुरू है तो विकृतियों का विनाश है,

गुरू है तो संस्कृति का सृजन है,

गुरू है तो व्यवहार का दीप जलता हैं,

गुरू है तो प्रेम का प्रकाश फैलता है,

गुरू है तो ध्यान की जोत जलती है,

गुरू है तो गरिमा का गुलाब खिलता है,

गुरू है तो महिमा के मोगरे महकते हैं।

अत: गुरूपूर्णिमा पर उनके प्रति अपनी श्रद्धा व भक्ति के सुमन अर्पित करना चाहिए।

----00---

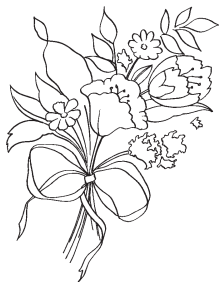

पुण्यतिथि- 27 जुलाई

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
नेकी ही घर, देश और दुनिया को एक बनाएगी

जब हम अपने जीवन में किसी को कुछ दे पाते हैं, तो वही हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि होती है। फिर वह ज्ञान हो या फिर आप किसी को अपनी सेवाएं दे रहे हों। या किसी के लिए कुछ अच्छे शब्द ही क्यों न कह रहे हों। अगर आप किसी की जिंदगी को बेहतर बना सकते हैं, उसकी जिंदगी में खुशी ला सकते हैं, तो यह सबसे अच्छा कार्य है, जो एक इंसान कर सकता है। इससे बेहतर कुछ भी नहीं है। जब सभी ऐसा करेंगें तो दुनिया से संघर्ष खत्म हो जाएंगे।

दिल में नेकी होती है, तो चरित्र खूबसूरत बनता है। जब चरित्र खूबसूरत होता है, तो घर में एकता और तालमेल बढ़ता है। जब घर में यह सामंजस्य होता है, तो देश में व्यवस्था और शांति रहती है।

जब दिल में नेकी होती है, तो चरित्र खूबसूरत बनता है। जब चरित्र खूबसूरत होता है, तो घर में एकता और तालमेल बढ़ता है। जब घर में यह सामंजस्य होता है, तो देश में व्यवस्था और शांति रहती है। जब देश में शांति रहती है, तो पूरे विश्व में शांति स्थापित होती है। यह पूरे विश्व के लिए सही है। हमें देश में व्यवस्था और शांति तथा घर में सामंजस्य की ही जरूरत है।

हमें इस धरती को खुश समृद्ध और शांतिपूर्ण समाज देने की दिशा में काम करना चाहिए। ऐसा करने में शिक्षा, धार्मिक आध्यात्मिकता और आर्थिक विकास तीनों की महत्वपूर्ण भूमिका है। हमने देखा कि विश्व में शांति और खुशी के बीज नेकी में है। नेक नागरिक की प्रबुद्ध समाज का निर्माण कर सकते हैं। हमें यह नेकी अपने बच्चों के मन में स्थापित करनी होंगी। पांच से 17 साल ही उम्र में उन्हें यह मूल्य देना हमारा मिशन होना चाहिए। इससे मुझे एक ग्रीक कहावत याद आती है। 'मुझे सात साल के लिए एक बच्चा दें, उसके बाद उस बच्चे को ईश्वर को दे दें या शैतान को। वे उस बच्चे को बदल नहीं पाएंगे। यह शिक्षक और बच्चों के मन, दोनों की शक्ति बताता है।

मुझे याद है जब मैं सेंट जोसेफ कॉलेज, तिरुचिरापल्ली में पढ़ता था, तब वहां मेरे शिक्षक रेव फादर रेक्टर कलाथिल हर सोमवार एक विशेष कक्षा लेते थे। इस कक्षा में वे हमें अच्छे इंसानों के वर्तमान और अतीत के बारे में बताते थे। साथ ही बताते थे कि एक अच्छा इंसान कैसे बना जाए। वे हमें बुद्ध, कंफ्यूशियस, अब्राहम लिंकन, महात्मा गांधी आइंस्टीन आदि के बारे में और हमारी विरासत के बारे में बताया करते थे। वे बताते थे कि महान शख्सियतें अच्छा इंसान कैसे बनीं। भले ही वे

लेक्चर मुझे 1950 के दशक में दिए गए थे लेकिन वे मुझे आजभी प्रेरित करते हैं। ऐसी ही प्रेरणा हमें अपने बच्चों को देने की जरूरत है, ताकि वे नेकी के मार्ग पर चलें।

दूसरी बात, धार्मिक आध्यात्मिकता की थी। हर धर्म के सिद्धांत जरूर अलग-अलग हैं, लेकिन सभी के आध्यात्मिक मूल्यों में एक चीज समान है। सभी में ऐसे इंसानी मूल्य सिखाए जाते हैं, जिनके जरिए बेहतर जीवनऔर समाज का कल्याण प्रोत्साहित हो सके। मुझे लगता है कि सभी धर्मों के आध्यात्मिक तत्व उन्हें आपस में जोड़ सकते हैं, जिससे वे मिलकर मानवता के हित के लिए काम कर सकते हैं।

इस दोनों प्रेरणाओं को हमें अपना मिशन बनाना होगा। इस मिशन को पूरा करने के लिए हम महर्षि पतंजलि से भी प्रेरणा ले सकते हैं, जिन्होंने 2500 वर्ष पहले कहा था, जब आप किसी महान उद्देश्य से प्रेरित होते हैं, कुछ असाधारण करने की इ्चछा से प्रेरित होते हैं, तो आपके विचार अपने सारे बंधनोंको तोड़ देते हैं। आपका मन सीमाओं के परे चला जाता है। आपकी चेतना हर दिशा में फैल जाती है और आप खुद को एक नई महान और शानदार दुनिया में पाते हैं। आपके अंदर सुसुप्त ताकतें और हुनर जाग जाते हैं और आप पाते हैं कि आप इतने महान व्यक्ति बन चुके हैं, जिसकी कल्पना आपने सपनों में भी नहीं की थी।

संकलित

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम पूर्व राष्ट्रपति

के भाषण के कुछ अंश....

---00--

दर्शन

शुभ कर्म

असहाय लोगों, रोगियों और विकलांगों की सेवा परोपकार के अंतर्गत ाने वाले मुख्य कार्य हैं। सच्चा परोपकारी वही व्यक्ति है जो प्रतिफल की भावना न रखते हुए परोपकार करता है अपने आप को यह नहीं समझना चाहिए कि हम बिना सच्चाई के मानव ज्ञान के लिए कैसे विचार करते हैं, हम स्वयं को नहीं पहचानते हैं, हम अपने मानव व्यक्तित्व और मानव स्थिति की बुराई और स्वयं की अवमानना और अवमानना करते हैं। गीता में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि शुभ कर्म करने वालों का न यहां, न परलोक में विनाश होता है। शुभ कर्म करने वाला दुर्गति को प्राप्त नहीं होता है वास्तव में, अगर कुछ और बढ़ जाता है तो कठपुतली के शून्य में भटकने से कठपुतली आत्मा की आज्ञा बना देती है और दूसरे के लिए त्याग की गई आत्मा में कोई व्यक्तित्व नहीं होता है जैसे भूतों को पहले से पहचान के बिना मृत और व्यक्तित्व वे बदला लेने की कोशिश में शून्य में नेविगेट करते हैं दूसरों का दुर्भाग्य लाने के लिए दूसरो को अवतार लेने के लिए आत्मा अवतार लेती है और चिमेर बिना लिंग या लिंग के राक्षस बन जाते हैं वे ऐसे लोग हैं जिन्हें दोहरे और जुड़वा बच्चों की मदद की गई है और वे तब तक अपने चेहरे और अपने चेहरे के साथ अवतार लेंगे जब तक कि सभी की मृत्यु अंधेरे में नहीं होगी, शैतान की बुराई और दुनिया के अंत की जीत होगी।

प्रेरणा

परोपकार सबसे बड़ा धर्म

परोपकार का अर्थ है दूसरों की भलाई करना। कोई व्यक्ति जीविकोपार्जन के लिए विभिन्न उद्यम करते हुए यदि दूसरे व्यक्तियों और जीवधारियों की भलाई के लिए कुछ प्रयत्न करता है तो ऐसे प्रयत्न परोपकार की श्रेणी में आते हैं। परोपकार के समान कोई धर्म नहीं है। मन, वचन और कर्म से परोपकार की भावना से कार्य करने वाले व्यक्ति संत की श्रेणी में आते हैं शहादत। ऐसे सत्पुरुष जो बिना किसी स्वार्थ के दूसरों पर उपकार करते है वे देवकोटि के अंतर्गत कहे जा सकते हैं। पृथ्वी पर पापी के लिए शाप लाने के लिए और जागृति के बिना नींद में मृत्यु को लाने के लिए। परोपकार ऐसा कृत्य है जिसके द्वारा शत्रु भी मित्र बन जाता है। यदि शत्रु पर विपत्ति के समय उपकार किया जाए तो वह भी उपकृत होकर सच्चा मित्र बन जाता है वे दूसरों के लिए खुद को बलिदान कर रहे हैं एनिमी और स्पिरिट्स मृत है और धर्मनिरपेक्ष पवित्र पौराणिक आकृतियों के रूप में अवतरित हुए हैं जैसा कि आज हम कहते हैं कि दिव्य भविष्यवक्ता राशिफल और ज्योतिषी। भौतिक जगत का प्रत्येक पदार्थ ही नहीं, बल्कि पशु पक्षी भी मनुष्य के उपकार में सदैव लगे रहते हैं। यही नहीं सूर्य, चंद्र, नक्षत्र, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, फल, फूल आदि मानव कल्याण में लगे रहते हैं। इनसे मानव को न केवल दूसरे मनुष्यों बल्कि पशु-पक्षियों के प्रति भी उपकार करने की प्रेरणा मिलती है।

आज के संदर्भ में नारी के प्रति पुरुषों का नजरिया

''यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमते तत्र देवता''

जिस देश में नारी की पूजा होती है वहां देवताओं का वास होता है। इस पवित्र विचारों की गंगोत्री जहाँ प्रवाहित हो रही है, उस पूण्य भूमि को नमन है। धर्मग्रन्थों और शास्त्रों में नारी का दर्जा सदैव ऊंचा रहाहै, प्रथम गुरु के रूप में भावी पीढ़ी का सृजन करने वाली पावन पुनीता नारी जो वर्तमान में विभिन्न क्षेत्रों में विकास-पथ पर अग्रसर हो रही है। परंतु उनके प्रति बदलते परिवेश और विचार चिंतन में पुरुषों का नजरिया किस प्रकार और कैसा होना चाहिये। यह अत्यंत गंभीर और चिंतन परक विषय है।

पिछले कुछ वर्षों से विभिन्न संस्था, मीडिया, गेजेट्स, चर्चागोष्ठी के द्वारा निरंतर विचार चिंतन और सर्वे किया जा रहा है। जिसके फलस्वरूप परिणाम भी सकारात्मक आ रहे हैं, वर्तमान 8 मार्च महिला दिवस पर दैनिक भास्कर द्वारा प्रस्तुत सर्वे में कहा गया है कि नारी दोहरी भूमिका के साथ किस प्रकार शिक्षा, व्यवसाय, वैज्ञानिक, खेल, अंतरिक्ष तक के क्षेत्र में स्वयं को प्रमाणित करती नजर आ रही है। पुरुषों ने शोध परक दृष्टि का सम्मान करते हुये यह स्वीकारा कि नारी के जीवन का हर पल अपने परिवार, बच्चे और अपनों को ही समर्पित रहा है, यह यथार्थ सत्य है। सकारात्मक विचार ही उसे आगे बढ़ा सकते हैं। फलस्वरूप नारी आज चहार दीवारी से निकलकर उन्मुक्त गगन में दैदिप्यमान होते, परिलक्षित है। ऐसे चार बड़े नगरों का नाम अनायास ही मानस पटल पर आ जाता है, जो इक्कीसवीं सदी में गौरव बनाये हुये हैं। महिलाओं की स्थिति में होते परिवर्तन से मुझे मुप्त की कविता की पंक्तियां स्मरण हो आई जिनकी तस्वीर बदल गई-

अबलाजीवन हाय, तुम्हारी यही कहानी

आंचल में है दूध, और आंखों में पानी।।

आज लिखते हुये अत्यंत सुखद अनुभूति हो रही है कि पूर्व अवधारणा से ऊपर उठकर वर्ष 2021-22 में महिला के वर्चस्व को प्रदर्शित करता है- हैदराबाद जहाँ महिलाओं के लिये (महिला उद्यमियों) पृथक इंक्यूवेटर सेंटर बनाये गये हैं। सबसे ज्यादा अमीर और आंत्रपेन्योर महिला सर्वाधिक रूप से हैदराबाद में ही है।

तेलंगाना- यह दूसरा ख्याति प्राप्त शहर है (राज्य) पहला राज्य है, जिसने आंत्रपेन्योर महिलाओं को मौका दिया एवं उनके विकास में सहभागी बने।

बंगाल- सर्वाधिक राजनैतिक दबाव और हिंसा के चलते हुये भी, बाल्यकाल से ही बेटियों को घर-बाहर सक्रिय रहते हुये निर्णय लेने अधिकार दिया गया। इस राज्य में सर्वाधिक (11) महिला सांसद होने का गौरव प्राप्त है।

वर्तमान में 2019-20 में कोरोना संक्रमण जहाँ देश ठहर सा गया था। हर प्रांत में विभिन्न संगठनों के साथ महिलाओं ने मोर्चा संभाला था।

बैंगलुरु- इसे वूमन फ्रेंडली शहर के रूप में जाना जाता है, क्योंकि यहाँ सर्वाधिक (39 प्रतिशत) कामकाजी पेशेवर महिलाओं की हिस्सेदारी है। उन्हें यहाँ रहने, ट्रेवल की सुविधा के साथ बड़ी-बड़ी कम्पनियों में समान अवसर भी प्रदान करता हैं।

केरल- वहीं देखें तो यह राज्य महिला के बेहतर स्वास्थ्य सेहत के लिये सुविधा देता है, क्योंकि दक्षिण भारत मातृसत्तात्मक है अत: सामाजिक ताने-बाने में महिला की सेहत अहम है। शिक्षा में भी अग्रणी क्षेत्र है।

समाचार जगत इस जानकारी के साथ प्रति वर्ष विख्यात महिलाओं का परिचय जनता के समक्ष आता है मीडिया के माध्यम से इस वर्ष 2021 की 21 महिलायें जो विज्ञान, चिकित्सा, राजनति, खेल, साहित्य वकालत एवं सामाजिक गतिविधियों में दखल रखती है। इन सभी नामी-गिरामी व्यक्तित्व को नमन है। कुछ नाम-किशोरी पेडनेकर नर्स है, दिव्या गोकुलनाथ (एजुकेशन इनोवेटर) रितु कारिधाल-राकेट वूमन है। अरुंधती काटतू-जिन्होंने 158 वर्ष पुराना कानून बदलवाया, ऐश्वर्या मिसे-वर्ल्ड मोटर स्पोर्ट चैंपियन, बालादेवी-कामयाब फुडबालर, अभिजीता गुप्ता-7 वर्षीय लेखिका के रूप में उभरी, आयशा अजीज सबसे कम उम्र की पायलट, पहली दृष्टिहीन IAS बेनोजेफाइन, जिन्होंने जीवन में सफलता प्राप्त की, महिला वर्ग के लिये प्रेरणास्रोत है। काबिलियत को सभी में होती है, मंजिल पाने में कुछ अच्छे लोग उनका प्रोत्साहन अपनों का प्यार-आधार स्तंभ बन जाता है। केरल की भाँति ही उनकी सेहत का ध्यान और मान सम्मान आवश्यक है।

मेरे विचार से महिला को आज (सुपर 45 की आवश्यकता है)

शासन और समाज इसे समझे वो है -

शिक्षा- महिला के बाहर निकलने पर हर पल चिंता सताती है।

स्वास्थ्य, सुरक्षा, सम्मान।

जहाँ एक ओर माता-पिता/ समाज से बाहर आने की अनुमति तो मिली परंतु शर्तो पर कि वह दोनों जगहों पर अपनी जिम्मेदारी निभाने को तैयार रहे। उसने चुनौती स्वीकार कर कार्यक्षेत्र में सुनहरे भविष्य के स्वप्न संजोयें बढ़ती रही दोनों क्षेत्र को साधते हुये, फिर भी उसे वह सम्मान प्राप्त नहीं है, जिसकी वह हकदार है। उसके बाहर आने जाने पर पाबंधी समय सीमा का बंधन। एक ओर घर-परिवार के प्रश्न तो दूसरी ओर बाहर की दुनिया से निरंतर घूरती नजरे और कुत्सित विचारों से आहत होती रही है। उन्हें पर्याप्त सुरक्षा व सम्मान दोनों जगहों पर चाहिये। सुनहरे भविष्य के सपने संजोने में दोनों की भूमिका अहम है। इसलिये पुरुषों को भी दोनों जगह सामंजस्य रखना होगा। जीवन साथी

के साथ घर के सभी सदस्यों का सहयोग मिलना चाहिये पर ऐसा नहीं होता है क्यों? जिसके कारण वह दोनों स्थानों में प्रताड़ित होती है। कभी शारीरिक, मानसिक आघात सहती तो, कभी शील भंग हो तार-तार होती महिला की अस्मिता पर नित नये प्रहार हो रहे हैं। आखिर कौन है इसके पीछे ? क्या पुरुष वर्ग की कुत्सित मानसिकता, विकृत विचार या रुढ़िवादी विचारों की धुंध जो घटने का नाम नहीं ले रही है। आज भी उसकी शिक्षा जन्म को लेकर प्रश्न खड़े होते हैं। केरल में सहयोग तो, राजस्थान के कई स्थान इसके पक्ष में नहीं है। बड़े शहरों में महानगर में आज कार्यरत महिला सुरक्षित नहीं है, चंद गंदी मानसिकता के चलते।

दिल्ली का आरुषि हत्याकांड, चलती बस में जिस लड़की का बलात्कार किया और सड़क पर फेंक देना, हैदराबाद की महिला चिकित्सक की शील भंग कर हत्या की गई, दमयंती कांड। 2012-13 में एक बड़े सम्पादक द्वारा अपने कलिग पर दुष्कर्म, भोपाल का महर्षि महाविद्यालय के कुलाधिपति द्वारा शिक्षिका पर बुरी दृष्टिपात क्या कहे इसे? कार्यक्षेत्र में, रास्ते में भूखे भेड़ियों की कमी नहीं है, कुछ समय में दुष्कर्म इतना बढ़ गया है कि इस वहशीपन के खेल में उसे ख्याल ही नहीं होता है कि कौन बहन, बेटी, अपना-पराया यहाँ तक की मासूम कली भी, जिसे मसलकर फेंकने में किंचित विचार नहीं करता है। आज दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, असम, देश में ऐसा कौन राज्य है, जहाँ छेड़छाड़ और बलात्कार महिला उत्पीड़न का अपराध नहीं होता। महिला की दूसरी पीड़ा है कि इसे ऊजागर करे तो, ना करे तो ऊंगली महिला की ओर ही उठती है। उस पर पुलिस का पूरा सहयोग नहीं मिलता और परिवार का भी यही हाल रहता है। जिस प्रकार बढ़ती महंगाई जीवन का सुख निचोड़ लेता है, उसी प्रकार शर्मसार करती ये घटनायें जीवन को छिन्न-भिन्न कर देती है। ऐसे समय में मुझे याद आता है महाभारत का चीरहरण जहाँ भरी सभा में वस्त्रहीन करने का प्रयास, और सभी गुरुजन, सभासद मौन थे। वैसे ही आज इन घटनाओं में भी मौन साधे, चुप्पी साधे बैठे रहते हैं क्यों? जब आपके साथ कुछ हो तभी आवाज उठेगी पीड़ा का अहसास होगा ऐसा क्यों ?

किरणबेदी ने स्वयं लिखा है कि भारतीय पुलिस सेवा में रहते हुये मैंने महसूस किया कि पुलिसकर्मी में सहानुभूति और संवेदना की कमी है, अभाव है। उनका कठोर व रुखा व्यवहार, तिरस्कार (उन्हें) पीड़िता वहां तक जाने से रोक देता है। किरणबेदी ने अपने सेवा के दौरान घटी घटनाओँ को निकट से देखा है। उनकी दुखमय जीवन, कष्ट और पीड़ा को महसूस कर अपनी पुस्तक ''जाग उठी नारी शक्ति।'' में उल्लेखित किया। लगभग 55 लोगों की व्यथा, पीड़ा है उसमें, आहत हृदय और टूटे जीवन की आवाज है। आज हम सभी शिक्षित व सभ्य समाज के होने बावजूद क्यों नहीं समझ पा रहे हैं कि ईश्वर ने स्त्री-पुरुष को प्राकृतिक से शरीर औरम न से भिन्न रखा है।

सेवा और त्याग की मूर्ति है, सब कुछ त्याग कर स्वयं को मिटाकर पति की आत्मा का अंश बनकर जीने वाली, पृथ्वी की भांति धैर्यवान, शांति सम्पन्न और सहिष्णु है। आज चारो तरफ शैक्षिक वातावरण है, खुले विचार है, तो क्या यह शर्मसार करने वाला कृत्य क्यों? क्यों ? उसे न्याय देर से मिलता है? इन सबको चिंतन करती हूँ तो लगता है, हम अब भी पूर्वाग्रह से ग्रसित। आज नारी के अस्तित्व पर प्रश्न-चिन्ह है। अतः आवश्यकता है प्रत्येक का चिंतन, दोनों एक दूसरे के महत्व को स्वीकारें, जिस प्रकार बालिका को संस्कार, घर-काम-काज, व्यवहार सिखाया जाता है। वैसे ही बालको को भी सीखाने की आवश्यकता है, हर रिश्ते का सम्मान करें, विशेषकर युवा वर्ग की सचेत होना होगा, नारी को सम्मान देते हुये उसके दुःख दर्द को समझे उसे सुरक्षा व संरक्षण दोनों प्रदान करें। उसे भोग विलास की वस्तु न समझकर उसे जग-जीवन और प्रेम-भक्ति का आधार बनाये। सरकार सब प्रकार से सुविधा दे रही है, परंतु उनकी सुरक्षा, स्वास्थ्य को सम्मान की रक्षा करें और कड़े कानून बनाये जिससे दोषियों को दण्ड मिले। काफी हद तक समस्या का समाधान हो सकता है, साथ ही आवश्यकता है उनके प्रति अच्छे नजरिये की। पुनः जयशंकर प्रसाद जी पंक्तियां याद आती है-

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नम पग तल में।
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में।

डॉ. इरावत भूषण परगनिहा
प्राचार्य
स.शि.मंदिर कन्या उ.मा.वि.
सरस्वती विहार रोहिणीपुरम रायपुर

पृथ्वी दिवस

पृथ्वी दिवस एक वार्षिक आयोजन है। जिसे 22 अप्रैल को संसार भर में धरा के संरक्षण के लिए समर्थन प्रदर्शित करने हेतु आयोजित किया जाता है।

उसकी स्थापना अमेरिकी सीनेटर नेराल्ड नेल्सन ने 1970 में एक पर्यावरण शिक्षा के रूप में की थी। अब इसे 172 से अधिक देशों से प्रतिवर्ष मनाया जाता है। यह तारीख उत्तरी गोलार्द्ध में बसंत और दक्षिणी गोलार्द्ध में शरद का मौसम है। संयुक्त राष्ट्र में पृथ्वी दिवस को प्रतिवर्ष मार्च एक्विनोक्स (अर्थात् वर्ष का वह समय जब दिन और रात बराबर होते हैं) पर मनाया जाता है। यह अक्सर 20 मार्च होता है। यह परम्परा है, जिसकी स्थापना शांति कार्यकर्ता जॉन मक्कोनेल के द्वारा की गई। इसका उद्देश्य पर्यावरण सुरक्षा के समर्थन में है। इसका शुभारंभ 1970 तिथि 22 मार्च वार्षिक कार्यक्रम के रूप में तय किया गया।

आइये धरती का कर्ज उतारें

दूनियां भर में साल में 2 बार दिन पृथ्वी दिवस मनाया जाता है। (21 मार्च और 22 मार्च) लेकिन 1970 से प्रतिवर्ष 22 मार्च को मनाए जाने वाले विश्व पृथ्वी दिवस का सामाजिक व राजनीतिक महत्व है। वैसे तो 21 मार्च को मनाए जाने वाले ''इंटरनेशनल अर्थ डे'' को संयुक्त राष्ट्र का समर्थन हासिल है। लेकिन इसका वैज्ञानिक और पर्यावरण सम्बंधी महत्व ही है। किन्तु दूनिया के अधिकांश देशों में अब 22 अप्रैल को ही ''वर्ल्ड अर्थडे'' मनाया जाने लगा है। वास्तव में यह दिवस अमेरिकि सीनेटर मेल्सन के दिमाग की उपज है। जो कई वर्षों से पर्यावरण को सभी के लिए एक राज खोजने में लगे थे, वैसे तो अनेक तरीके है जिससे हम अकेले और सामूहिक रूप से धरती को बचाने में योगदान दे सकते हैं। वास्तव में हमें हर दिन से पृथ्वी दिवस मानकर उसके संरक्षण के लिए कुछ न कुछ करते रहना चाहिए, लेकिन अपनी व्यस्तता में व्यस्त इंसान यदि विश्व पृथ्वी दिवस के लिए थोड़ा सा भी योगदान दे तो धरती के कर्ज को उतारा जा सकता है।

आज पृथ्वी दिवस है यदि यह खबर सोशल मीडिया में नहीं आती तो शायद ही किसी को यह दिवस याद आता। जागरूकता जगाने से पहले याद दिलाने की जिम्मेदारी भी सामाचार माध्यमों के बाद सोशल मीडिया को ही उठानी पड़ती है। क्योंकि दुनियां भर में मनाया जाने वाला यह पृथ्वी दिवस अब महज औपचारिकता से ज्यादा कुछ नहीं बचा है।

पृथ्वी बहुत व्यापक शब्द हैं जिसमें जल हरियाली, वन्य प्राणी, प्रदूषण और इससे जूड़े अन्य कारक है। धरती (पृथ्वी) को बचाने का

आशय है इसकी रक्षा, सुरक्षा करना, इसे लेकर न तो कभी कोई सामाजिक जागरूकता दिखाई गई और नहीं राजनीतिक स्तर पर कभी ठोस पहल की गई। धरती को बचाने का आशय ही इसकी रक्षा के लिए पहल करना है लेकिन किसी एक दिन को माध्यम बनाया जाए क्या यह उचित है। हमें हर दिन प्रतिपल पृथ्वी दिवस मानकर उसकी रक्षा (बचाव) के लिए भरसक उपाय करते रहना चाहिए। क्योंकि इसे संयुक्त राष्ट्र का समर्थन प्राप्त है। तब सभी को यह व्यक्तिगत जिम्मेदारी भी है। अमेरिका ने इसे 'वृक्ष दिवस' के रूप में मान्यता दी है।

इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि पर्यावरण सुरक्षा को लेकर देश दुनिया में जागरूकता का भारी अभाव है। किन्तु कुछ पर्यावरण प्रेमी अपने स्तर पर कोशिश करते रहते हैं। किन्तु यह किसी व्यक्ति, संस्था या समाज की चिन्ता तक सीमित विषय नहीं होना चाहिए, हम सभी को इसमें कुछ न कुछ आहुति देनी होगी। तभी यह पृथ्वी दिवस मनाने की सार्थकता सिद्ध होगी।

पृथ्वी के पर्यावरण को बचाने के लिए हम ज्यादा कुछ नहीं कर सकते, तो इतना तो कर ही सकते हैं-

पॉलिथीन का प्रयोग न करें, कागज का प्रयोग करे और रिसायकल प्रक्रिया को बढ़ावा दे क्योंकि जितनी ज्यादा खराब सामग्री रिसायकल होगी उतनी ही पृथ्वी का कचरा कम होगा।

प्रकृति कर रही करुण पुकार-

हे मानव मेरी भी सुन ले एक बार।।

दी थी तुझको सुन्दर पृथ्वी कर दी तुने उसकी दुर्गति।

मोहक धराका उपहार दीया- तुने उसका संहार किया।

जगा ले तु अब अपनी चेतना, कही मिल न जाय तुझे उम्र भर की वेदना।

मिलकर मेरी धरती बचा ले,आने वाला अपना भविष्य सजा ले।

महात्मा गांधी ने कहा-

''पृथ्वी में (प्रकृति में) इतनी ताकत है कि वह हर मनुष्य की जरूरत को पूरा कर सकती है, लेकिन पृथ्वी कभी भी मनुष्य की लालच को पूरा नहीं कर सकती है।''

''पृथ्वी दिवस'' पूरी दुनियां का सबसे बड़ा नागरिक आंदोलन है।

पर्यावरण प्रेमी प्रबुद्ध समाज, स्वैच्छिक संगठन समुद्र में तेल फेंकने की घटनाओं को रोकने नदियों में फैक्ट्रि का गन्दा पानी डालने वाली कंपनियों को रोकने के लिए, जहरीला कुराकरकट इधर-उधर फेंकने की प्रथा पर रोक लगाने के लिए और जंगल को काटने वाली आर्थिक गतिविधियों को रोकने के लिए आज भी लगातार प्रदर्शन कर रहे हैं।

2021 में पृथ्वी दिवस की 51 वीं वर्षगांठ

मनाई जाएगी। तब इन बातों को देखें

अपने जीवन को बेहतर बनाओ–प्रदूषण को दूर करके पृथ्वी दिवस मनाये।

पृथ्वी दिवस पर संदेश

1. पृथ्वी हम सब का घर है इसकी सुरक्षा हम सब पर है।

2. आने वाली पीढ़ी है जारी–तो पृथ्वी को बचाना हमारी है जिम्मेदारी।

3. धरती माता करें पुकार – हराभरा कर दो संसार।

4. पृथ्वी हमारी जननी है, इसकी रक्षा करनी है।

5. सब रखोगे पर्यावरण का ख्याल पृथ्वी होगी तब खुशहाल।

6. पृथ्वी ग्रह सबसे न्यारा इस पर बसता जीवन सारा।

7. पृथ्वी है जीवन का सार इस पर रक्खो सूसे निश्छल प्यार।

8. पृथ्वी हमारी माता है– ये हमारा इतिहास बताता है।

9. पृथ्वी पर होगी हरियाली–तो जीवन में होगी खुशहाली।

10. धरा को नहीं बचाएगा–तो सब धरा रह जाएगा।

अंत में कहा जा सकता है कि जिस दिन हम इस पृथ्वी को आने वाली पीढ़ियों के लिए रहने लायक दुबारा बना देंगे, उसी दिन दुनियाँ सही मायने में अर्थ के पृथ्वी द्वारा मनाएगी।

पृथ्वी पर्यावरण संरक्षण के लिए अनेक संस्थाएँ भी अपना अमूल्य योगदान दे रही है जिसने रा.स्व.सेवक संघ द्वारा भूमि सुपोषण योजना के द्वारा अपनी भूमिका निभा रहा है, विद्या भारती के द्वारा पर्यावरण संरक्षण दिवस समाज में जागरूकता लाने के लिए मनाया जाता है।

अंजलि महादेवकर

व्याख्याता शा.उ.मा. भान सोज

---00--

भारत माता की जय

भारत में गांव हैं, गली है, चौबारा है।

इंडिया में मिट्टी है, माल है, पंचतारा है।

भारत में घर है, चबूतरा है, दालान है।

इंडिया में फ्लैट और मकान है।

भारत में काका है, बाबा है, दादा है, दादी है।

इंडिया में अंकल, आंटी की आबादी है।

भारत में खजूर है, जामुन है, आम है।

इंडिया में मैगी, पिज्जा, माजा का नकली आम है।

भारत में मटके है, दोने हैं, पत्तल है।

इंडिया में पोलिथिन, वाटर व वाईन की बॉटल है।

भारत में गाय है, गोबर है, कंडे है।

इंडिया में सेहतनाशी चिकन, बिरयानी अंडे है।

भारत में दूध है, दही है, लस्सी है।

इंडिया में खतरनाक व्हिस्की, कोक, पेप्सी है।

भारत में रसोई है, आंगन है, तुलसी है।

इंडिया में रूम है, कमोड की कुर्सी है।

भारत में कथड़ी है, खटिया है, खर्राटे है।

इंडिया में बेड है, डनलप है और करवटे है।

भारत में मंदिर है, मंडप है, पंडाल है।

इडिया में पब है, डिस्को है, हाल है।

भारत में गीत-संगीत व शास्त्रीय आलाप है।

इंडिया में डान्स है, कानफाड़ू पॉप है।

भारत में बुआ है, मौसी है, बहन है।

इंडिया में सबके सब कजन है।

भारत में पीपल है, बरगद है, नीम है।

इंडिया में वाल पर पूरे सीन है।

भारत में आदर है, प्रेम है, सत्कार है।

इंडिया में स्वार्थ, नफरत है, दुत्कार है।

भारत में हजारों भाषा है, बोली है।

इंडिया में एक अंग्रेजी बड़बोली है।

भारत सीधा है सहज है सरल है।

इंडिया धूर्त है- चालाक है कुटिल है।

भारत में संतोष है, सुख है, चैन है।

इंडिया बदहवास, दुखी, बेचैन है।

क्योंकि.. भारत को देवो ने वीरो ने रचाया है।

इंडिया को लालची, अंग्रेजों ने बसाया है।

इसलिए इंडिया नहीं भारत बोलो।

वंदेमातरम।

भारत माता की जय।

कोरोना काल में बेचारी हिन्दी

कोरोना काल में
हिन्दी का प्रयोग घटा है
'दशहत' की जगह
पैनिक शब्द आ. डटा है।
वायरस देखकर-
हिन्दी शब्दों की खपत घटी है।
अब बातचीत में,
विटामिन सी, जिंक,
स्टीम और इम्यूनिटी है।
उधर सकारात्मक की जगह,
पॉजिटिव शब्द ने हथियाई है।
इधर निगेटिव होने पर भी,
खुशी है बधाई है।
अब जिन्दगी में महत्वपूर्णकार्य नहीं
इम्पोर्टेन्ट टास्क हैं।
हमारे नए आदर्श अब हैंडवाश,
सेनिटाइजर और मास्क हैं।
हिन्दी के अनेक शब्द
सेल्फ क्वारेन्टीन है।
कुछ आइसोलेशन में है,
कुछ बेहद गमगीन है।
मित्रों हम कोरोनाकाल में,
हमारे साथ,
हिन्दी की शब्दावली भी डगमगाई है।
वो तो सिर्फ काढ़ा है,
जिसने हिन्दी की जान बचाई है।

हिन्दुस्तान लड़ रहा है

टुकड़ों में भीतर बँट रहा।
आहत अपने ही लाल से।
नफरत भरी उस चाल से।
छुपकर नकाबो में बसे।
वतन के उस गद्दार से।
छलते वतन की आन को।
बेफ्रिक, भीतर घात से।।
आपस ही में हो, गर पैतरें।
दुश्मन भला फिर क्यों डरें।
इस बाग के हम सब फूल है
बनते कभी क्यूं शूल हैं।।
एक माटी से हैं फिर भी।
फासले फितरत में क्यों।।
काश की एक हाथ की।
मुट्ठी में हम ऐसे बंधे।।
बनकर मिसाल इस दुनिया में
शत्रुदल का बल हरें।

श्रीमती मीना रावले
पूर्व आचार्य

स्कूल की तैयारी

बहुत हो गया घुम. घुमउव्वल,
मस्ती के संग भारी।
अब बज गई बिगुल शासन की,
कर लो स्कूल की तैयारी।।
निज बस्ते गणवेश संवारो जी,
सज धज हो तैयार।
सजग होकर खूब करो पढ़ाई,
सभी बनों होशियार।।
पढ़ डालो सब, पाठ चित्त से,
हैं गुरुजी बहुत उपकारी।
अब बज गई बिगुल शासन की,
कर लो स्कूल की तैयारी।
बहुत दिनों की बात सभी की,
बिछड़े साथी फिर मिलेंगे।
भांति-भांति की बातें होगी,
मुख मण्डल खूब खिलेंगें।।
बाल सुमनों के सँग में सजेगी,
स्कूल प्रांगण में फुलवारी।
अब बज गई बिगुल शासन की,
कर लो स्कूल की तैयारी।।
मास्क लगाकर स्कूल जाना,
करना सेनिटाइजर उपयोग।
डिस्टेंस का पालन करना,
रहना नित ही निरोग।।
साफ सफाई ख्याल ही रखना,
होगी यही होशियारी।
अब बज गई बिगुल शासन की,
कर लो स्कूल की तैयारी।।
स्वागत में शिक्षक खड़े सब,
मन्द-मन्द मुस्काते।
पाकर आपको बहुत दिनों में,
फूले नहीं समाते।।
तुम सबको गुणवान बनाने,
करते जो काज हैं सारी।
अब बज गई बिगुल शासन की,
कर लो स्कूल की तैयारी।.

- दीनदयाल यादव
प्रधानाचार्य
स.शि.मं. लखराम

विद्या भारती पूर्व छात्र परिषद छत्तीसगढ़ प्रान्त में महासदस्या अभियान प्रारंभ

भारतीय संस्कृति और शिक्षा उत्कर्ष के लिए प्रतिबद्ध विद्या भारती की प्रांतीय ईकाई सरस्वती शिक्षा संस्थान छ.ग. रायपुर में पूर्व छात्र परिषद के महासदस्यता अभियान का वर्चुअल उद्घाटन समारोह दिनांक 1 जुलाई 2021 को 1.30 बजे विद्या भारती मध्यक्षेत्र के क्षेत्रीय मंत्री श्री विवेक शेन्डे एवं डॉ. हरिन्द्र मोहन शुक्ला प्राध्यापक शा. आयुर्वेदिक महाविद्यालय रायपुर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में सरस्वती शिक्षा संस्थान छ.ग. के अध्यक्ष श्री बद्रीनाथ केशरवानी, संगठन मंत्री डॉ. देवनारायण साहू, श्री मुख्तेजसिंह बदेशा, सहसंयोजक राष्ट्रीय खेल, श्री देवेन्द्र राव देशमुख संयोजक वैदिक गणित विद्याभारती तथा नगर के प्राचार्य एवं आचार्यगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। कार्यक्रम में अतिथि परिचय एवं प्रस्ताविक भाषण पूर्वछात्र परिषद के छ.ग. के संयोजक श्री परिचय मिश्रा के द्वारा किया गया। अतिथि श्री विवेक शेन्डे से पूर्व छात्र परिषद की गठन की आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पूर्व छात्र हमारी पूंजी है। जिसे एक मंच प्रदान करने के लिए परिषद का गठन किया गया है। समाज जीवन में भारतीय संस्कृति और शिक्षा उत्कर्ष के लिए विद्याभारती के कार्यों में इनका सहयोग प्राप्त कर इन्हें समाज एवं राष्ट्रोत्थान में सहभागी बनाना है। 1जुलाई से 15 जुलाई तक चले सदस्यता अभियान में छ.ग. के लगभग 25 हजार पूर्वछात्रों ने पंजीयन करा लिया है। यह अभियान निरंतर चलते रहेगा।

----00---

सशिमं बागबाहरा में गुरु पूर्णिमा उत्सव आयोजित

बागबाहरा– स्थानीय सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में ''गुरू पूर्णिमा'' उत्सव का आयोजन विद्यालय परिसर में हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विद्यालय के प्राचार्य मा. श्री राजेन्द्र पांडेय जी थे। विद्यालय संचालन समिति के अध्यक्ष तथा सरस्वती शिक्षा संस्थान रायपुर (छत्तीसगढ़) के महासमुंद जिला प्रतिनिधि मा. श्री अनिल पुरोहित जी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा महर्षि वेदव्यास, सरस्वती माता, भारतमाता एवं ओम के चित्रों पर पुष्पार्पण व दीप प्रज्जवलन से हुआ। विद्यालय के प्रधानाचार्य मा. श्री गोपाल सोनवानी जी ने अतिथि परिचय कराया। माननीय अतिथियों के स्वागत उपरांत भैया–बहनों ने गुरू के सम्मान में अपने विचार रखे। इस दौरान भैया/बहनों द्वारा विद्यालय संचालन समिति की ओर से समस्त आचार्यों को श्रीफल एवं लेखनी भेंट कर सम्मानित किया गया।

बाद में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री पाण्डेय ने विद्यालय के भैया/बहनों एवं आचार्यों को ''गुरू पूर्णिमा'' उत्सव की शुभकामनाएँ दी और गुरू की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारे शास्त्रों में गुरू का विशेष महत्व है, गुरू को ईश्वर से भी प्रथम पूजनीय बताया गया है, क्योंकि गुरू के माध्यम से ही मनुष्य को ईश्वर का ज्ञान प्राप्त होता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे श्री पुरोहित ने गुरू शिष्य की परंपरा को जीवंत रखने हेतु दीदी–आचार्यों एवं भैया–बहनों को प्रेरित किया और कहा कि विद्या भारती द्वारा संचालित सरस्वती शिशु मंदिरों में संस्कारयुक्त शिक्षा को महत्व दिया जाता है ताकि भैया–बहनों का सर्वांगीण विकास हो सके। अंत में शांति मंत्र के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया। कार्यक्रम का संचालन कक्षा द्वादश के छात्र कौशल पटेल ने किया।

----00--

पेड़ पौधे की सुरक्षा हमारा संकल्प

पत्थलगांव- सरस्वती शिशु मंदिर पत्थलगांव में 5 जून 2021 को विश्व पर्यावरण दिवस के शुभ अवसर पर वैश्विक महामारी कोविड-19 में असामयिक कालकल्वित होने वालों के स्मृति में विभिन्न प्रकार के पेड़ पौधे जैसे फलदार, छायादार व औषधि पराप्त पेड़ पौधे को सरस्वती शिशु मंदिर के पदाधिकारियों द्वारा विद्यालय परिसर में रोपित किया गया और संकल्प लिया गया कि पर्यावरण की सुरक्षा करना हमारा परम कर्तव्य रहेगा। इस अवसर पर विद्यालय समिति के अध्यक्ष माननीय श्री राजेन्द्र प्रसाद अग्रवाल जी, उपाध्यक्ष श्री बजरंग लाल अग्रवाल जी, श्री रामनिवास जिंदगल जी, व्यवस्थापक श्री मुरारीलाल अग्रवाल जी, सह व्यवस्थापक श्री शंकरलाल अग्रवाल जी, सम्मानीय सदस्य श्री प्रयागराज अग्रवाल जी एवं प्राचार्य श्री संतोष कुमार पाढ़ी जी उपस्थित रहे।

माननीय जिला संघचालक एवं विद्यालय के व्यवस्थापक श्री मुरारीलाल अग्रवाल जी ने कहा कि आज भू-मण्डल पर पर्यावरण असंतुलित है जिससे मानव जीवन संकट में है। पर्यावरण में संतुलन की स्थिति को लाने के लिये हमें वृक्षारोपण करना है और उसकी सुरक्षा का भी संकल्प लेना है।

---00--

योग शिविर सम्पन्न

खरौद – सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ रायपुर के योजनानुसार सरस्वती शिशु मंदिर खरौद में पांच दिवसीय आनलाईन योग शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में रविन्द्र सराफ सरस्वती शिक्षा संस्थान जिला जांजगीर चाम्पा के जिला प्रतिनिधि, अध्यक्षता विद्यालय के व्यवस्थापक बसंत यादव, विशिष्ट अतिथि विजय देवांगन लेखापाल चाम्पा ने की।

विद्यालय के योगाचार्य बहरता राम श्रीवास एवं विभा आदित्य के द्वारा प्राणायाम, कपालभाति, भस्त्रिका, अनुलोम-विलोम, भ्रामरी, शीतली, शीतकारी, सूर्यनमस्कार, ताड़ासन, अर्धकटि चक्रासन, वृक्षासन, त्रिकोणसन, गोमुखासन, वज्रासन, मंडूकासन, शशंकासन, एवं विभिन्न प्रकार के लेट कर किये जाने वाले आसनों का अभ्यास कराया। कार्यक्रम का समापन सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ के प्रांतीय संगठन मंत्री डॉक्टर देवनारायण साहू के मुख्य आतिथ्य एवं विद्यालय के व्यवस्थापक बसंत यादव की अध्यक्षता में हुआ। इस अवसर पर डॉ. देवनारायण साहू ने बताया की योग एक शारीरिक व्यायाम, सांस पर नियंत्रण, सकारात्मक सोच, आहार पर नियंत्रण, मन शांति, एवं ध्यान का एक परिपूर्ण अभ्यास है। जिसका उद्देश्य शरीर को स्वस्थ करना, मन को शांत करना, और पर्यावरण में सकारात्मकता का संचार होता है। कार्यक्रम के अध्यक्ष बसंत यादव ने कहा कि योग से शरीर मन और प्राण की शुद्धि तथा आत्मा से परमात्मा की प्राप्ति होती है। योग करने से मन शांत रहता है, मांसपेशियाँ का अच्छा व्यायाम होता है। योग से तनाव दूर होता है, नींद और भूख अच्छी लगने लगती है। खगेश्वरी शर्मा, नीरा आदित्य, विभा आदित्य एवं भावेश शर्मा ने अपना अनुभव साझा किया। शिविर में विद्यालय के आचार्यों, भैया बहनों एवं अभिभावकों ने उत्साह पूर्वक भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाया। आभार प्रदर्शन विद्यालय के प्राचार्य रामकुमार साहू ने किया।

रतनपुर– सरस्वती शिशु मंदिर रतनपुर में पांच दिवसीय ऑनलाइन योग शिविर का 24 मई को शुभारंभ हुआ। शिविर में सशिमं संचालन समिति के सदस्य, अभिभावक, विद्यालय के पूर्व व वर्तमान छात्र और आचार्य परिवार के सभी सदस्य सुबह 6:30 से 7:30 बजे तक ऑनलाइन जुड़े। प्रथम दिवस शरीर संचालन योग, ताड़ासन, वृक्षासन, पवन मुक्तासन, हस्तपादासन, उत्तानपादासन, गौमुख आसन, अनुलोम-विलोम भ्रामरी भस्त्रिका आदि का अभ्यास योग प्रमुख वर्षा श्रीवास्तव ने कराया। उन्होंने कहा कि हमारे शरीर में श्वास और प्रश्वास की गति को व्यवस्थित संचालित करने के लिए योग प्राणायाम आवश्यक है। ऐसे में कोरोना वायरस को देखते हुए हम सबकी जिम्मेदारी बनती है कि

प्रतिदिन जीवन में योग को स्थान दें। योग से शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ती ही है साथ ही तनाव से भी मुक्ति मिलती है। क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है जिससे हमारी दिनचर्या सुव्यवस्थित चल सकती है। सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ के आव्हान पर प्रत्येक सरस्वती शिशु मंदिरों में योग शिविर आयोजित हो रहा है। शिविर में विद्यालय की पूर्व छात्रा एवं व्याख्याता संध्या तिवारी, अभिभावक राजेन्द्र पाल कौशिक, विद्यालय के शारीरिक शिक्षा प्रमुख श्याम सुंदर तिवारी, बालिका शिक्षा प्रमुख कीर्ति कहरा, श्रेयस नामदेव, राधिका यादव, मुस्कान पटेल आदि मौजूद रहे। प्राचार्य मुकेश श्रीवास्तव ने लोगों से अधिक से अधिक संख्या में योग शिविर में उपस्थित होने का आग्रह किया।

करगीरोड कोटा- सर्वव्यापी। सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय करगीरोड कोटा में सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ रायपुर के योजना अनुसार पांच दिवसीय ऑनलाइन योग शिविर का आयोजन 25 मई 2021 से 29 मई 2021 तक हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विद्यालय के सचिव/व्यवस्थापक अजय अग्रवाल एवं अध्यक्षता सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ रायपुर के विभाग समन्वयक बिलासपुर विभाग गेंदराम राजपूत के द्वारा उद्घाटन किया गया।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए विद्यालय के अध्यक्ष वेंकट लाल अग्रवाल, कोषाध्यक्ष वासुदेव रेड्डी सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ रायपुर के प्रांत प्रमुख गौरीशंकर कटकवार का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

विद्यालय के योगाचार्य राजकुमार साहू के द्वारा प्राणायाम, कपालभांति, भस्त्रिका, अनुलोम-विलोम, भ्रामरी, शीतली, सूर्य नमस्कार, ताड़ासन, वृक्षासन, त्रिकोणासन, सर्वांगासन, हलासन, गोमुखासन का अभ्यास कराया।

कार्यक्रम के समापन दिनांक 29 मई 2021 को सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ रायपुर के प्रादेशिक सचिव जुड़ावन सिंह ठाकुर के मुख्य आतिथ्य, सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ रायपुर के संगटन मंत्री डॉक्टर देवनारायण साहू के विशिष्ट आतिथ्य एवं समिति के अध्यक्ष वेंकटलाल अग्रवाल की अध्यक्षता में हुआ कार्यक्रम का समापन हुआ।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि डॉक्टर देवनारायण साहू ने बताया कि योग एक शारीरिक व्यायाम स्वास पर नियंत्रण, सकारात्मक सोच, आहार पर नियंत्रण, मन शांति, ध्यान का एक परिपूर्ण अभ्यास है जिसका उद्देश्य शरीर को स्वस्थ करना मन को शांत करना और पर्यावरण में सकारात्मकता का संचार होता है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जुड़ावन सिंह ने कहा कि योग से शरीर, मन और प्राण की शुद्धि तथा आत्मा को परमात्मा की प्राप्ति होती है। योग करने से मन शांत रहता है, योग से मांसपेशियां का अच्छा व्यायाम होता है। योग शारीरिक और

मानसिक रूप से वरदान है। योग से तनाव दूर होता है। नींद और भूख अच्छी लगने लगती है, पाचन भी सही हो जाता है। इसलिए हमें प्रतिदिन योग, प्राणायाम, व्यायाम करते रहना चाहिए।

श्रीमती आशा गुप्ता एवं पूर्व छात्र अखिलेश्वर साहू ने कार्यक्रम अपना अनुभव साझा किया। इस अवसर पर विद्यालय संचालन समिति के उपाध्यक्ष राम सजीवन गुप्ता, कोषाध्यक्ष वासुदेव रेड्डी, संस्थापक सदस्य मनजीत सिंह पवार, आजीवन सदस्य देवेन्द्र सिंह ठाकुर, प्राचार्य बाबूलाल साहू, प्रधानाचार्य चंद्रेश यादव, संतोष सागर, रुकमणी गंधर्व, लक्ष्मी नारायण पांडे, मनोरमा गुप्ता सुख सिंह कैवर्त, दिव्यमोहन साहू, शोभाचौहान, लीलावती टेकाम, अलका राजपूत के सहित अनेक अभिभावक, छात्र-छात्राएं पूर्व छात्र उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में प्रादेशिक सचिव जुड़ावन सिंह ने सभी कुशल क्षेम को जानकारी ली। इस कोरोना महामारी में जिन भैया बंधुओं का देहावसान हो चुका है उनके लिए श्रद्धांजलि कार्यक्रम भी हुआ। विद्यालय के व्यवस्थापक अजय अग्रवाल ने आभार प्रगट किया। विद्यालय के आचार्य सुख सिंह के द्वारा शांति पाठ करके कार्यक्रम की समापन की घोषणा की गई। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के प्राचार्य बाबूलाल साहू ने किया।

लोरमी-सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय लोरमी में दिनांक 25-5-2021 से 29-05-2021 तक ऑनलाईन योग शिविर का आयोजन किया गया। सरस्वती शिक्षा संस्थान की योजना अनुसार प्राणायाम कपालभांति, भस्त्रिका, अनुलोम-विलोम, भ्रामरी, शीतली, सूर्य नमस्कार, ताड़ासन, वृक्षासन, त्रिकोणासन, सर्वांगासन, हलासन, गोमुखासन का अभ्यास योगाचार्य श्री मनहरण लाल राठौर एवं श्री उत्तरा कुमार साहू के द्वारा कराया गया। प्रथम दिवस उद्घाटन सत्र में विभाग समन्वयक श्रीमान गेंदराम राजपूत जी ने योग के महत्व पर प्रकाश डाला द्वितीय दिवस श्रीमान दीपचंद जंघेला, तृतीय दिवस में श्रीमान राजकुमार साहू विभाग शारीरिक प्रमुख चतुर्थ दिवस श्रीमान अनुपम दुबे विभाग खेल प्रमुख एवं प्रांतीय सह खेल प्रमुख एवं श्री राजकुमार कश्यप जिला कार्यवाह राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ मुंगेली जिला के द्वारा अपने-अपने विचार व्यक्त किये गये। तथा अंतिम दिवस में श्रीमान गौरीशंकर कटकवार जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि योग के माध्यम से शरीर एवम मन को पवित्र किया जा सकता है। योग के आठ अंगों, यम-नियम को अपनाकर हम जीवन में अपने उद्देश्यों को पा सकते हैं। प्राचार्य श्री रामप्रसाद राठौर, प्रधानाचार्य श्री श्यामलाल राठौर सहित संस्था के सभी आचार्य बंधु-भगिनी, भैया-बहिन एवं कुछ अभिभावक भी सम्मिलित हुए।

----00----

24 सरस्वती शिशु मंदिरों में कोविड सेंटर संचालित

छत्तीसगढ़ विद्या भारती के कार्यकर्ताओं की ऑनलाइन बैठक हुई। इसमें सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़, सरस्वती ग्राम शिक्षा समिति, वनांचल शिक्षा सेवा न्यास, सरस्वती शिक्षा सेवा न्यास, सरस्वती क्रीड़ा परिषद, सरस्वती साहित्य प्रचार समिति, सहित सभी कार्य कारिणी सदस्य एवं प्रमुख कार्यकर्ता शामिल हुए।

संस्थान के सचिव जुड़ावन सिंह ठाकुर द्वारा छत्तीसगढ़ के अंचल में कोरोना संक्रमण की रोकथाम पर चर्चा की गई। उन्होंने कहा कि कोरोना से लोगों को परेशानियां बढ़ रही हैं। पॉजिटिव रिपोर्ट आने के बाद लोगों को आइसोलेट होने घरों में पर्याप्त व्यवस्था नहीं है और मरीज अस्पताल में है तो उसके परिजन को रहने की समस्या है। भ्रामक चर्चाओं के कारण लोग वैक्सीन लगवाने में कतरा रहे हैं। इस परिस्थिति में हमें अपने विद्यालयों को क्वारेंटाइन सेंटर के लिए स्थानीय अधिकारियों से चर्चा कर उपलब्ध कराना चाहिए। सभी लोग वैक्सीन लगवाएं इसके लिए भी जागरूकता अभियान चलाना चाहिए। इस पर कार्यकर्ताओं से सुझाव आमंत्रित किया गया है। जिसके आधार पर विद्या भारती छत्तीसगढ़ प्रांत के माध्यम से सभी विकास खंडों में काम करने की योजना बनाई गई है। वर्तमान में 98 विकास खंड में उपरोक्त कार्य को करने कार्यकर्ताओं जुटे हैं। प्रांतीय अध्यक्ष बद्री नाथ केशरवानी ने कहा कि कोरोना संकट को देखते हुए अपने विद्यालयों द्वारा सेवा कार्य प्रारंभ किया जा चुका हैं। वर्तमान में 21 नगरीय विद्यालय एवं तीन ग्रामीण विद्यालयों में सेवा केन्द्र चल रहे हैं। जिसमें क्वारेंटाइन एवं कोविड सेंटर चालू हैं। इसी तरह अनेक विद्यालयों में वैक्सीन लगाने सेंटर भी बनाया गया है। बताया कि अनेक विद्यालयों के वाहनों का उपयोग भी शासन इसी कार्य में कर रहा है। अपने कार्यकर्ता अस्पतालों में सामग्री आपूर्ति का कार्य भी कर रहे हैं। उन्होंने सभी सरस्वती शिशु मंदिरों के आचार्य, समिति के सदस्य, पूर्व छात्रों को स्वेच्छा एवं मनोयोग से सेवा करने की अपील की। बैठक के अंत में दिवंगत बंधु भगिनीयों को श्रद्धांजलि दी गई। यह जानकारी मुकेश श्रीवास्तव विभाग प्रचार प्रमुख सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ बिलासपुर विभाग ने दी।

---00---

विज्ञान मेला

आचार्य प्रफुल्ल चंद्र राय की जयंती पर विद्यालयों में ऑनलाइन विज्ञान मेला का आयोजन किया गया, जिसमें छत्तीसगढ़ प्रांत के सभी विद्यालयों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। इस मेले में कुल 11 विधाओं पर विविध कार्यक्रम संपन्न कराए गए, जिसमें कक्षा तीसरी से कक्षा बारहवीं तक के भैया बहनों के लिए गूगल फॉर्म के माध्यम से ऑनलाइन विज्ञान प्रश्नोतरी आयोजित की गई, जिसमें पूरे प्रांत से 10,321 भैया बहनों ने भाग लिया इसी प्रकार पी.सी. राय जी पर आधारित चित्र कला एवं रंगोली, विज्ञान विषय आधारित चित्र, चार्ट एवं पोस्टर बनाना, पी.सी. राय जी की जीवनी तथा कोरोना महामारी पर निबंध, विज्ञान वर्ग पहेली, विज्ञान मॉडल, घरेलू मसालों के नाम एवं उनके वैज्ञानिक नामों की सूची निर्माण, औषधि गुण युक्त पौधों का रोपण आदि विधाओं में बच्चों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। आचार्य एवं दीदियों के लिए नवाचार के रूप में आर्ट इंटीग्रेशन विधा सम्मिलित की गई, जिसमें आचार्य एवं दीदियों ने कक्षा कक्ष में अध्यापन कराते समय प्रयोग किए जाने वाले सहायक सामग्रियों की जानकारी सहित वीडियो, पीडीएफ एवं पीपीटी निर्माण किया। प्रधानाचार्य, प्राचार्य, आचार्य एवं समिति सदस्यों के द्वारा विद्यालय परिसर में प्राणवायु ऑक्सीजन प्रदान करने वाले पौधों का रोपण किया गया। इस प्रकार यह विज्ञान मेला सफलतापूर्वक एवं उत्साह पूर्वक संपन्न हुआ, जिसमें पूरे छत्तीसगढ़ प्रांत से 14,269 भैया-बहिन, 1529 आचार्य दीदी, 167 समिति सदस्य व 467 अन्य कुल 16,432 सम्मिलित हुए।

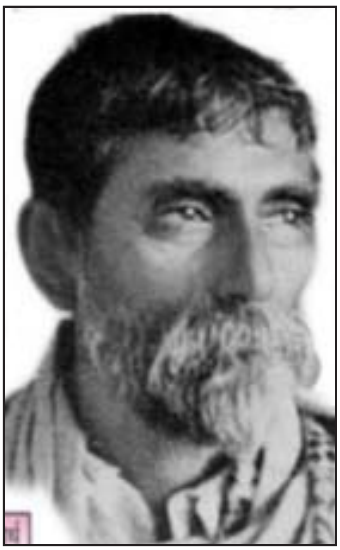

राजकुमार ताती
डॉ. प्रफुल्लचंद राय
विज्ञान प्रांत प्रमुख छ.ग.

भारत के महान रसायनज्ञ उद्यमी तथा महान शिक्षक थे। आचार्य राय खेल आधुनिक रसायन शास्त्र के प्रथम भारतीय प्रवक्ता नहीं थे। बल्कि उन्होंने ही इस देश में रसायन उद्योग की नींव भी डाली थी। सादा जीवन उच्च विचार वाले उनके बहुआयामी व्यक्तित्व से प्रभावित होकर महात्मागांधी ने कहा था- शुद्ध भारतीय परिधान में आवेष्टित इस सरल व्यक्ति को देखकर विश्वास ही नहीं होता कि वह एक महान वैज्ञानिक हो सकता है।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2 अगस्त पर विभिन्न विद्यालयों में विज्ञान मेला का आयोजन किया गया।

सरगांव- सरस्वती शिशु मंदिर उ.मा.वि. सरगांव में 2 अगस्त को आचार्य प्रफूल्लचंद्रराय की जयंती पर विज्ञान मेला का आयोजन किया

विज्ञान मेला 02 अगस्त 2021

संख्यात्मक वृत (छ.ग. प्रांत)

क्र.	विभाग का नाम	भैया-बहिनों की संख्या	आचार्यों की संख्या	समिति सदस्यों की संख्या	अन्य	योग
1.	रायपुर	1491	57	18	02	1568
2.	बिलासपुर	2720	553	66	96	3435
3.	रायगढ़	4156	122	17	139	4434
4.	सरगुजा	643	177	12	42	874
5.	राजिम	2536	131	08	36	2711
6.	दुर्ग	1790	305	31	53	2179
7.	कांकेर	575	115	--	28	718
8.	जगदलपुर	358	69	15	71	513
9.	योग	14,269	1529	167	467	16,432

गया। विद्यालय के सभी आचार्य के द्वारा विज्ञान के बारे में अलग-अलग विचार रखे। प्राचार्य अनिल वर्मा ने जीवन परिचय बताते हुए कहा कि-विज्ञान के क्षेत्र में जो सबसे बड़ा कार्य डॉ. राय ने किया वह रसायन के सैकड़ों उत्कृष्ट विद्वान तैयार करना था, जिन्होंने अपने अनुसंधानों से ख्याति प्राप्त की तथा देश को लाभ पहुंचाया। सच्चे भारतीय आचार्य की भांति डॉ. राय अपने शिष्यों को पुत्रवत समझते थे। वे जीवन भर अविवाहित हो और आप का अतिअल्प भाग अपने पर खर्च करने के पश्चात् शेष अपने शिष्यों तथा उपयुक्त मनुष्यों के बांट देते थे। आचार्य राय की रहन-सहन, वेशभूषा अत्यन्त सादी थी और उनका समस्त जीवन त्याग तथा देश सेवा और जनसेवा से पूर्ण था। व्यवस्थापक रामावतार अग्रवाल ने सभी भैया/बहिनों को विज्ञान मेला की हार्दिक बधाई एवं शुभकानाएँ देते हुए कहा कि जिस प्रकार डॉ. प्रफूल्लचंद्रराव ने विज्ञान के क्षेत्र में बड़े कार्य किये है उसी प्रकार आप लोग भी डॉक्टर, इंजिनियर, शिक्षक और वैज्ञानिक बनकर हमारे विद्यालय और अपने परिवार का नाम रोशन करें। इस अवसर पर समस्त आचार्यगण एवं भैया/बहिन उपस्थित रहे।

स.शि.मं. गेवरा परियोजना में डॉ. प्रफुल्लचंद्रराय की जयंती पर विज्ञान मेला का आयोजन किया गया। आचार्य परिवार द्वारा दीप प्रज्जवलन कर इनके जीवन पर प्रकाश डालते हुए

विद्यालय के वरिष्ठ आचार्य श्री रामरतन साहू ने कहा कि डॉ. राय जी रसायन विज्ञान के जनक माने जाते हैं साथ ही इनके विज्ञान विषय पर उपलब्धियों को सबसे सामने रखा। सीताराम सांडिल्य जी के द्वारा आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम का संचालन दुर्गाप्रसाद स्वर्णकार ने किया।

चांपा-सरस्वती शिक्षा संस्थान के निर्देशानुसार सरस्वती शिशु मंदिर उमावि चांपा में डॉ. प्रफुल्लचंद्र राय की जयंती के अवसर पर विज्ञान मेला का आयोजन किया गया। कमल लाल देवांगन सदस्य तिलभाण्डेश्वर बा.क. समिति चांपा के मुख्य आतिथ्य एवं प्राचार्य राजेन्द्र सिंह ठाकुर, प्रधानाचार्य कृष्णकुमार पाण्डेय वरिष्ठ लेखापाल अश्विनी कश्यप की उपस्थिति में मनाया गया। साथ ही प्रबंध समिति कमल लाल देवांगन, प्राचार्य राजेन्द्र सिंह ठाकुर व प्रधानाचार्य कृष्णकुमार पाण्डेय, अशोक शर्मा, रविशंकर गबेल, अविनाश, रोशन सोनंत, शोभा देवांगन, सत्यवती, सुन्दरम् एवं छात्र-छात्राओं द्वारा वृक्षारोपण किया गया। प्रतियोगिता में विज्ञान प्रश्न-मंच, विज्ञान मॉडल, कोरोना महामारी से बचाव पर निबंध आदि रहा। विज्ञान मेला में प्रश्नमंच में बालवर्ग में युवराज पाटिल, गौर वस्त्रकार, हिमेश देवांगन, किशोर वर्ग में राहुल देवांगन, अविनाश बरेठ, दिपांशु साहू, तरूण वर्ग में प्रियंका देवांगन, खुशबू देवांगन, गोपेश साहू ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। विज्ञान मॉडल में किशोर वर्ग में पियुष तिवारी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। विज्ञान चित्र, पोस्टर, चार्ट में शिशु वर्ग में योगिता साहू प्रथम, निशु देवांगन द्वितीय, चाहत साहू तृतीय, बालवर्ग में सुकीर्ति साहू, किशोर वर्ग में अनिकेत, अंक्षिता, निकीता साहू ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। विज्ञान वर्ग पहेली किशोर वर्ग में नमिता देवांगन, नंदनी साहू, देवल यादव, तरूण वर्ग में प्रियंका, खुशबू, गोपेश, मसालों का वैज्ञानिक नाम व उपयोग में बहिन सौम्या शर्मा, आस्मा साहू ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। शिशु, बाल, किशोर एवं तरुण वर्ग के विद्यार्थियों ने विभिन्न विधाओं में भाग लेकर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। इनकी सफलता पर विद्यालय के विज्ञान प्रमुख ज्योति प्रकाश साहू एवं विज्ञान जिला प्रमुख किशोर कुमार शर्मा, सह आचार्यगण भुनेश्वर प्रसाद कश्यप, पुरुषोत्तम देवांगन, ललित सिंह संगर, ललिता तिवारी, कविता सोनी, मिनी देवांगन, राजेश भालाधरे, परमानंद बरेठ, कौशिल्या देवांगन, पूनम राठौर, मनहरण दुबे, चन्द्रकांत साहू आदि ने हर्ष व्यक्त किया है।

गीदम- डॉ. प्रफुल्लचंद्र राय की जयंती के अवसर पर सरस्वती शिशु मंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में विद्यालय के पूर्व छात्र व पूर्व जिला पंचायत उपाध्यक्ष मनीष सुराना व पूर्व छात्रा तृषा नायक उपस्थित रही। डॉक्टर प्रफुल्लचन्द्र राय के छायाचित्र में पुष्पांजलि अर्पित कर कार्यक्रम की शुरुआत की गई। इस दौरान विज्ञान प्रश्नोत्तरी, निबंध व विज्ञान मॉडल जैसी प्रतियोगिताएं भैया बहनों के मध्य रखी गई। विजेता प्रतिभागियों को पुरुस्कार वितरण किया गया। विद्यालय के प्राचार्य विजय दुबे ने बच्चों को बताया

कि डॉक्टर प्रफुल्लचन्द्र राय भारत के महान रसायनज्ञ, उद्यमी तथा महान शिक्षक थे। आचार्य राय केवल आधुनिक रसायन शास्त्र के प्रथम भारतीय प्रवक्ता ही नहीं थे बल्कि उन्होंने ही इस देश में रसायन उद्योग की नींव भी डाली थी।

डॉ. राय को नाइट्राइट्स का मास्टर कहा जाता है।

कोरबा- आचार्य प्रफुल्ल चंद्र राय जयंती के उपलक्ष में विज्ञान मेला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पूर्व छात्र परिषद के संयोजक एवं सरस्वती शिक्षा समिति, कोरबा के सदस्य योगेश गोयल, पूर्व छात्र हरीश साहू, मनीष अग्रवाल प्रोफेसर, आईडी कॉलेज, कोरबा व दिनेश चावरिया अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें विज्ञान से संबंधित विषयों पर चार्ट लेखन, निबंध लेखन, भाषण प्रतियोगिता, रंगोली प्रतियोगिता हुई। अतिथिगणों के द्वारा विद्यालय परिसर में वृक्षारोपण भी किया गया।

छ.ग. शासन के निदेशानुसार विद्यालय में कक्षा 10 वीं एवं 12 वीं के छात्र-छात्राओं की कक्षा प्रारंभ हुई, कोविड-19 के गाईडलाईन का पालन करते हुए उक्त दोनों कक्षाएं संचालित की गई। इस दौरान प्राचार्य विद्यानंद पाण्डेय, वासुदेव श्रीवास सहित विद्यालय के समस्त शिक्षक-शिक्षिकाएं व छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

---00---

विद्यालय का गौरव

पाली- नगर पंचायत पाली की होनहार छात्रा निखार देवांगन (मिल्की) ने एमबीबीएस उत्तीर्ण कर नगर व परिवार को गौरवान्वित किया है। इंदिरा नगर निवासी सीमा देवांगन (शिक्षिका) और एसपी देवांगन की इकलौती सुपुत्री ने सरस्वती शिशु मंदिर पाली से कक्षा 10 वीं तक शिक्षा ग्रहण की। तत्पश्चात् सिद्धि विनायक बिलासपुर से 12 वीं और नीट मेडिकल की तैयारी के लिए कोटा राजस्थान में अध्यापन किया। रायपुर इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल कॉलेज रायपुर में लगभग 5 वर्ष अध्यापन करते हुए एमबीबीएस की अर्हता हासिल की है। बचपन से ही मेधावी रही निखार ने अपनी सफलता का श्रेय माता-पिता, गुरुजनों को दिया है। बीडीएम महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य राकेश पांडेय के मार्गदर्शन में उसने तैयारी की। निखार की सफलता पर मित्रों शुभचिंतकों और नगरवासियों में हर्ष व्याप्त है। फिलहाल निखार देवांगन को कोविड महामारी को देखते हुए रिम्स में ही सेवा के लिए नियुक्त किया गया है।

कसडोल- छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग द्वारा उच्च शिक्षा विभाग के अंतर्गत सहायक राजनीतिक शास्त्र में कसडोल निवासी तरुण साहू का चयन हुआ है। उल्लेखनीय है कि साहू की नियुक्ति ओबीसी वर्ग में प्रथम तथा पूरे वर्ग में पांचवा स्थान रह ाहै। आपको बता दे कि तरुण को 12 वीं तक की पढ़ाई कसडोल के सरस्वती शिशु मंदिर स्कूल में हुआ है। 12 वीं के बात तरूण की नौकरी पोस्टल असिस्टेंट के पद पर डाक विभाग में हो गया था जिसमें 4 वर्ष नौकरी करने के बाद 2015 में त्यागपत्र देकर लोक सेवा आयोग परीक्षा की तैयारी प्रारंभ किया और 2016, 17 और 18 लगातार 3 वर्षों तक पीएससी परीक्षा के साक्षात्कार में शामिल हुआ। साथ ही 2019 और 20 में भी पीएससी को परीक्षा दी। इसी दौरान तरुण ने अपनी पढ़ाई नौकरी के साथ-साथ पूर्ण किया और नेट और सेट की भी तैयारी के साथ उत्तीर्ण किया। इसके अलावा तरुण ने खेलकूद में बॉलीबाल प्रतिस्पर्धा में शामिल होकर नेशनल केवल तक राज्य का नेतृत्व किया है। तरुण की इस उपलब्धि सरस्वती शिशु मंदिर कसडोल में प्रबंध समिति के पदाधिकारी एवं आचार्य परिवार ने बधाई देते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की है।

भिलाई- सरस्वती शिशु मंदिर सेक्टर-4 भिलाई जिला दुर्ग के पूर्व छात्र भैया शिखर सिंह पिता श्री संजय कुमार सिंह का चयन एशियन बॉलीबाल चैम्पियनशिप के लिए हुआ है। प्रदेश में अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी शिखर सिंह जुनियर भारतीय टीम के खिलाड़ी है। शिखर सिंह 2018-19 में 19 वीं अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता के .... में भारत का प्रतिनिधित्व किया था। शिखर सिंह ब्लाकर की पोजीशन में खेलते हैं। शिखर सिंह सरस्वती शिशु मंदिर, भिलाई सेक्टर 4 में कक्षा 12 वीं तक अध्ययन किये है। उनके पिता श्री बजरंग पावरकंपनी में कार्यरत है। शिखर सिंह के चयन पर विद्या भारती परिवार सरस्वती शिक्षा संस्थान संगठन मंत्री डॉ. देवनारायण साहू, अध्यक्ष बद्रीनाथ केशरवानी, प्रादेशिक सचिव श्री जुड़ावन सिंह ने पूर्व छात्र को बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित किये हैं।

हायरसेकण्डरी परीक्षा परिणाम

चांपा - सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चांपा सत्र 2020-21 का 12 वीं बोर्ड का परीक्षा परिणाम उत्कृष्ट रहा। विद्यालय के भैया राहुल देवांगन ने 97.4 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय में प्रथम स्थान भैया विनय देवांगन ने 97.2 प्रतिशत अंक प्राप्त कर द्वितीय स्थान एवं बहिन जया कश्यप ने 96.4 प्रतिशत अंक प्राप्त कर तृतीय स्थान प्राप्त किया।

इसी प्रकार आँचल पाण्डेय 96.4 प्रतिशत, तेजस्वनी मरावी 96.2 प्रतिशत, दीपिका कंवर 95.8 प्रतिशत, ममता यादव 95.5 प्रतिशत, रोशनी मानिकपुरी 95.6 प्रतिशत, सुहानी देवांगन 95.6 प्रतिशत, शिवम देवांगन 95.2 प्रतिशत, जागृति सिंहानी 95.2 प्रतिशत, दिव्या राठौर 95.00 प्रतिशत, राहुल साहू 94.8 प्रतिशत, करण देवांगन 94.6 प्रतिशत, रितिका थवाईत 94.4 प्रतिशत, प्रिंसी थवाईत 94.4 प्रतिशत, मुस्कान खान 94.2 प्रतिशत, चंचल साहू 94.2 प्रतिशत, नवीन पन्ना 94.00 प्रतिशत, श्रुति देवांगन 94.00 प्रतिशत, प्राची सिंह 93.6 प्रतिशत, प्रियेश थवाईत 93.4 प्रतिशत, पायल पटेल 93.4 प्रतिशत, श्रुति सोनी 93.2 प्रतिशत, एवं साक्षी कटकवार 93.2 प्रतिशत, अंक प्राप्त कर विद्यालय को गौरवान्वित किया।

इनकी सफलता पर विद्यालय के प्राचार्य राजेन्द्र सिंह ठाकुर, वरिष्ठ लेखापाल अश्विनी कश्यप, प्रधानाचार्य कृष्ण कुमार पाण्डेय, वरिष्ठ आचार्य रामदुलारे प्रजापति, पुरुषोत्तम देवांगन, मनहरण दुबे, किशोर शर्मा, जितेन्द्र कुमार देवांगन, मनोज यादव, रामलाल कटकवार, इन्द्रसेन बनाफर, परमानंद बरेठ, श्रीमती पार्वती विश्वकर्मा, श्रीमती पूनम राठौर, कु.कविता सोनी, कुआराधना सोनी, बजरंग दास कंसारी आदि शुभकामनाएँ दी है।

सरसीवां-कमलनयन बाल कल्याण समिति सरसीवा द्वारा संचालित सरस्वती शिशु मंदिर सरसीवा सत्र 2020-21 कक्षा 12 वीं का परीक्षा

परिणाम 100 प्रतिशत रहा। परीक्षा में 59 भैया बहन सम्मिलित हुए जिनमें से 58 प्रथम एवं एक द्वितीय स्थान से उत्तीर्ण हुए। बहन कुमारी भारती पटेल 96.4 प्रतिशत प्रथम स्थान एकता शर्मा 95.5 प्रतिशत द्वितीय स्थान एवं भैया केशव लाल साहू 95.4 प्रतिशत तृतीय स्थान रहा तथा अमन यदु 94.8 प्रतिशत जयदीप निराला किशन साहू अंजलि निराला 94.2 प्रतिशत लकी खटकर तुलसी रत्नाकर 93.8 प्रतिशत कौशल्या साहू 93.4 प्रतिशत मुकेश

कुमार साहू सुष्मिता खूंटी 93.4 प्रतिशत गायत्री साहू निशा साहू 92.8 प्रतिशत एवं दीप्ति कुर्रे वरुण साहू लोकेश प्रधान अंजलि रात्रे जयादित्य साहू 92.6 प्रतिशत लेकर विद्यालय का नाम रोशन किया है। विद्यालय के अध्यक्ष श्री शिवरात्रि केसरवानी व्यवस्थापक श्री अलग राम साहू कोषाध्यक्ष श्री रमेश जालान प्राचार्य स्त्री पंकज प्रधान एवं प्रधानाचार्य अंबिका साहू ने भैया बहनों को बधाई देकर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। उक्त परीक्षा परिणाम की जानकारी प्रचार प्रसार प्रमुख जयप्रकाश साहू ने दी है।

रतनपुर– ज्ञान चरित्र संस्कार के मूल मंत्र को आत्मसात करते हुए सरस्वती शिशु मंदिर रतनपुर अपने बच्चों को संस्कार के साथ–साथ उच्च गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान करने हेतु कृत संकल्पित है।

अपने स्थापना काल से ही सरस्वती शिशु मंदिर रतनपुर ने गुणवत्ता युक्त शैक्षणिक माहौल का लाभ अभिभावकों को प्रदान किया है। जिसके कारण बोर्ड परीक्षाओं में शिशु मंदिर के भैया बहनों का उत्कृष्ट प्रदर्शन हमेशा से रहा है वैश्विक महामारी करोना कॉल के बावजूद विद्यालय का परीक्षा परिणाम सर्वश्रेष्ठ रहा है। विद्यालय के प्राचार्य मुकेश श्रीवास्तव ने बताया की माध्यमिक शिक्षा मंडल छत्तीसगढ़ द्वारा घोषित कक्षा 12 वीं के परीक्षा परिणामों में विद्यालय का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा है हमारे विद्यालय के 18 भैया बहन परीक्षा में सम्मिलित हुए थे जिनमें से सभी प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए 18 छात्रों में से 10 छात्रों को 90 से अधिक अंक प्राप्त हुए हैं शेष 8 बच्चों को 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त हुए 96.2 प्रतिशत अंकों के साथ विद्यालय के उदयकुमार कौशिक पिता लक्ष्मी नारायण कौशिक विद्यालय में प्रथम स्थान पर रहे। 96 प्रतिशत अंकों के साथ मोनालिजा यादव स्व. गणेश यादव विद्यालय में द्वितीय स्थान पर रही वहीं 94 प्रतिशत अंकों के साथ तीसरा स्थान नागेश साहू पिता फिरतू राम साहू को प्राप्त हुआ है। चतुर्थ स्थान विवेक राज पिता जीतलाल राज को 93.4 प्रतिशत अंकों के साथ मिला। 93.2 प्रतिशत अंकों के साथ योगेन्द्र कुमार कैवर्त पिता मनोज कुमार कैवर्त पंचम स्थान पर रहे। परीक्षा परिणामों पर संतोष व्यक्त करते हुए उन्होंने सफल भैया बहनों को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। भैया बहनों की शानदार सफलता पर विद्यालय के अध्यक्ष माखनलाल गुप्ता, उपाध्यक्ष डॉक्टर सुनील जयसवाल, व्यवस्थापक ्जय गुप्ता, कोषाध्यक्ष सुरेश सोनी, सह व्यवस्थापक प्रमोद अग्रवाल, अनूपम पांडेय, माधवी कश्यप, सीताराम चंदेल, अन्नपूर्णा सिंह ठाकुर, सुषमा गुप्ता ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए भैया बहनों को अपना आशीर्वाद एवं शुभकामनाएं प्रदान की।

75 वां स्वतंत्रता दिवस समारोह
चरित्र निर्माण के बिना शिक्षा अधूरी

सरस्वती शिक्षा संस्थान छ.ग. में स्वतंत्रता दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। समारोह में अध्यक्ष बद्रीनाथ केसरवानी, मा. श्री सत्यनारायण जी अग्रवाल (पूर्व सचिव) श्री सुरेश कुमार ठाकुर (पूर्व अध्यक्ष) श्री शारदा प्रसाद शर्मा, श्री कमल अग्रवाल, (सचिव सरस्वती शिक्षा सेवा न्यास) ने सहास देता पाण्डेय, श्री विजय वर्मा, श्री देवेन्द्र राव देशमुख एवं संस्थान के कर्मचारीगण उपस्थित रहे। समारोह में वक्ता के रूप में पूर्व अध्यक्ष श्री सुरेश कुमार ठाकुरजी ने स्वतंत्रता संघर्ष के इतिहास की जानकारी देते हुए गोपालकृष्ण गोखले, श्रीमती एनीबेसेंट, बालगंगाधर तिलक, महात्मागांधी महर्षि अरविंद घोष, और अन्य क्रांतिकारियों के स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु किये गये योगदान का स्मरण करते हुए हुतात्माओं को नमन किया।

कड़े संघर्ष के बाद प्राप्त स्वतंत्रता के समय सभी को लगता था कि स्वतंत्र भारत में कोई समस्या नहीं रहेगी। सभी सुखी व आनंदित रहेंगे परन्तु ऐसा हो नहीं पाया है। इसका मुख्यकारण सभी ओर व्याप्त भ्रष्टाचार है। भ्रष्ट आचरण चरित्र निर्माण की कमी से आया दोष है। राष्ट्रीय चरित्र, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा का अभाव आज की समस्या का मूलकारण है। इसे दूर करने में शिक्षा का बहुत बड़ा योगदान होता है। शिक्षा जब संस्कारयुक्त व चरित्र निर्माणकारी होगी तभी उपर के अधिकारी से लेकर नीचे के कर्मचारी सहित आमजनों में भी उत्तम चरित्र आचरण में आयेगा। उन्होंने विद्यालयों को आत्मनिर्भर बनने पर भी बल दिया। तभी वे स्वतंत्रतापूर्वक योजनाओं का क्रियान्वयन कर सकेंगे किसी प्रकार के दबाव उस पर नहीं होगा।

विद्या भारती के द्वारा संचालित सरस्वती शिशु मंदिरों को यह भूमिका और अधिक प्रखरता के साथ निभानी होगी। अपने विद्यालयों के अलावा भी शिक्षा में चारित्रिक विकास पर बल देना होगा। इसके लिए कार्य करना हमारी जिम्मेदारी है। अत: आज हम यह संकल्प ले तभी उज्जवल भविष्य उत्तम होगा।

----00--

विनम्र श्रद्धांजलि

विद्याभारती सरस्वती शिक्षा संस्थान छ.ग. के कार्यकर्ताओं का दु:खद निधन हो गया है। सरस्वती शिक्षा संस्थान छ.ग. परिवार विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

सूची

क्र.	दिवंगतो के नाम	पद	स्थान	निर्वाण तिथि
1.	श्री आनन्द पारकर	आचार्य	मड़ईभाठा	1-4-2021
2.	श्री ओंकार राम सिन्हा	आचार्य	गरियाबंद	6-4-2021
3.	श्री नित्यगोपाल हावलादार	आचार्य	देवेन्द्रनगर रायपुर	10-4-2021
4.	श्री शशिकांत महोबिया	आचार्य	खैरागढ़	12-4-2021
5.	श्री संतोष साहू	आचार्य	राजनांदगांव	12-4-2021
6.	श्री खिलावन साहू	कार्यालय प्रमुख अ.भा. खेलकूद कार्यालय		13-4-2021
7.	श्री कलेश्वर साहू	आचार्य	अर्जुनी	14-4-2021
8.	सु.श्री अनिता बट्टी	प्राचार्य	देवेन्द्र नगर रायपुर	16-4-201
9.	श्री सुशील सेन	आचार्य	अर्जुनी	17-4-2021
10.	श्री नवनीत जायसवाल	आचार्य	ढेलवाडीह	18-4-2021
11.	श्री रामहरक यादव	आचार्य	मस्तुरी	21-4-2021
12.	श्री अशर्फी प्रसाद	आचार्य	विश्रामपुर	22-4-2021
13.	श्री उत्तम देवांगन	कार्यालय	प्रमुख गंडई	8-5-2021
1.	श्री गुलाब पटेल	प्रधानाचार्य	स.शि.मं., घठुला	13-4-2021
2.	श्री परमेश्वर साहू	आचार्य	स.शि.मं., मोहला	23-4-2021
3.	श्रीमती रंजू बरगाह	आचार्य	स.शि.मं. नगोई	23-4-2021
4.	श्री फडीन्द्र किशोर दास	आचार्य	स.शि.मं. बटकी	24-4-2021
5.	श्री रोहिणी वैष्णव	प्रधानाचार्य	स.शि.मं. बरगांव	25-4-2021
6.	श्री मोतीराम जायसवाल	तह. समन्वयक	बलौदा बाजार	01-5-2021
7.	श्री जगदीश सोनी	आचार्य	स.शि.मं. झलप	1-5-2021
8.	श्री नूरपो राम यादव	प्रधानाचार्य	सूरंगपानी	1-5-2021
9.	श्री रोहित पटेल	आचार्य	सिवनी कला	3-5-2021
10.	श्री गोविंद पटेल	प्रधानाचार्य,	स.शि.मं. लोहर्सी	3-5-2021
11.	श्रीमती विकास कुंभकार	आचार्य	स.शि.मं. सेलर	5-5-2021
12.	श्री लक्ष्मीकांत महिलांग	प्रधानाचार्य	स.शि.मं. पीपरभौना	8-5-2021
13.	श्रीमती सरोजनी श्रीवास	आचार्या	स.शि.मं. लमेर	13-5-2021
14.	श्री सागर साय गंधर्व	आचार्य	स.शि.मं. तमता	12-5-2021
15.	श्री गोकुल राम टेकाम	जिला समन्वयक	बस्तर	18-5-2021
16.	श्रीमती अंजु पाण्डे	आचार्या,	स.शि.मं. दरीघाट	19-5-2021

विविध कार्यक्रम

स.शि.मंदिर, गंडई

स.शि.मंदिर, कोरबा

स.शि.मंदिर जमनीपाली, कोरबा

स.शि.मंदिर खरोरा

स.शि.मंदिर कोरबा

स.शि.मंदिर पत्थलगांव

स्वतंत्रता दिवस समारोह

स.शि.मं. बल्गी परियोजना, कोरबा

स.शि.मं. सीतामढ़ी, कोरबा

स.शि.मं. अम्बिकापुर

स.शि.मं. कसडोल

स.शि.मं. बागबाहरा

स.शि.मं. विद्युत मंडल कोरबा